CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2018 with Solution PDF-Set 2/2

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 111**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 8 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1(क). सहता प्रहार कोई विवश, कदर्य जीव
जिसकी नसों में नहीं पौरुष की धार है
करुणा, क्षमा हैं वीर जाति के कलंक घोर
क्षमता क्षमा की शूरवीरों का शृंगार है।
प्रतिशोध से हैं होती शौर्य की शिखाएँ दीप्त
प्रतिशोध-हीनता नरों में महापाप है,
छोड़ प्रीति-वैर पीते मूक अपमान वे ही
जिनमें न शेष शूरता का वह्नि-ताप है
जेता के विभूषण सहिष्णुता-क्षमा हैं किंतु
हारी हुई जाति की सहिष्णुता अभिशाप है।
सेना साजहीन है परस्व हरने की वृत्ति
लोभ की लड़ाई क्षात्र धर्म के विरुद्ध है
चोट खा परंतु जब सिंह उठता है जाग
उठता कराल प्रतिशोध हो प्रबुद्ध है
पुण्य खिलता है चंद्रहास की विभा में तब
पौरुष की जागृति कहाती धर्मयुद्ध है।

प्रश्न (क): क्षमा कब कलंक और कब शृंगार हो जाती है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- क्षमा का मूल्य क्षमा करने वाले की शक्ति और परिस्थिति पर निर्भर करता है।
- उत्तर का आधार दिए गए पद्यांश या गद्यांश की पंक्तियाँ और उनका प्रसंगगत आशय है।

चरण 1: समर्थ व्यक्ति की क्षमा कवि के अनुसार शत्रु को परास्त करने की क्षमता रखते हुए क्षमा करना वीर का आभूषण है। ऐसी क्षमा स्वेच्छा से अपनाई गई उदारता है; उसके पीछे भय या विवशता नहीं होती। इसी भाव को पद्यांश में क्षमता क्षमा की शूरवीरों का शृंगार है कहा गया है।

चरण 2: विवश व्यक्ति की क्षमा इसके विपरीत, जिसमें प्रतिकार का साहस या सामर्थ्य नहीं है, उसका प्रहार और अपमान सहते जाना कायरता प्रकट करता है। ऐसी विवश क्षमा वीर जाति के लिए कलंक बनती है, क्योंकि उससे स्वाभिमान की रक्षा नहीं होती।

चरण 3: निष्कर्ष प्रतिकार की शक्ति के अभाव में की गई क्षमा कलंक है; समर्थ वीर की स्वेच्छापूर्ण क्षमा शृंगार है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में सामर्थ्य और विवशता का अंतर स्पष्ट करें; केवल क्षमा को अच्छा या बुरा न कहें।

1(ख). सहता प्रहार कोई विवश, कदर्य जीव
जिसकी नसों में नहीं पौरुष की धार है
करुणा, क्षमा हैं वीर जाति के कलंक घोर
क्षमता क्षमा की शूरवीरों का शृंगार है।
प्रतिशोध से हैं होती शौर्य की शिखाएँ दीप्त
प्रतिशोध-हीनता नरों में महापाप है,
छोड़ प्रीति-वैर पीते मूक अपमान वे ही
जिनमें न शेष शूरता का वह्नि-ताप है
जेता के विभूषण सहिष्णुता-क्षमा हैं किंतु
हारी हुई जाति की सहिष्णुता अभिशाप है।
सेना साजहीन है परस्व हरने की वृत्ति
लोभ की लड़ाई क्षात्र धर्म के विरुद्ध है
चोट खा परंतु जब सिंह उठता है जाग
उठता कराल प्रतिशोध हो प्रबुद्ध है
पुण्य खिलता है चंद्रहास की विभा में तब
पौरुष की जागृति कहाती धर्मयुद्ध है।

प्रश्न (ख): प्रतिशोध किसे कहते हैं? वह कब आवश्यक होता है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पद्यांश में प्रतिशोध अन्यायपूर्ण आक्रमण का प्रतिकार है, निजी लोभ की लड़ाई नहीं।
- उत्तर का आधार दिए गए पद्यांश या गद्यांश की पंक्तियाँ और उनका प्रसंगगत आशय है।

चरण 1: प्रतिशोध का अर्थ किसी के द्वारा किए गए आघात, अपमान अथवा अन्याय का प्रत्युत्तर देना प्रतिशोध कहलाता है। प्रस्तुत पद्यांश में इसका संबंध दबे हुए शौर्य के जागरण और अत्याचार के प्रतिकार से है। कवि इसे स्वाभिमान तथा पौरुष से जोड़ता है।

चरण 2: आवश्यकता की परिस्थिति जब कोई आक्रमणकारी चोट पहुँचाए और चुपचाप अपमान सहने से अन्याय बढ़ता जाए, तब आत्मसम्मान और अपने अधिकारों की रक्षा के लिए प्रतिकार आवश्यक होता है। चोट खा परंतु जब सिंह उठता है जाग इसी परिस्थिति का संकेत है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रतिशोध आघात या अन्याय का प्रत्युत्तर है; आक्रमण और अपमान से आत्मसम्मान की रक्षा के लिए वह आवश्यक होता है।

त्वरित सुझाव: प्रतिशोध की आवश्यकता बताते समय आक्रमण का प्रतिकार लिखें, दूसरों की संपत्ति हड़पने की इच्छा नहीं।

1(ग). सहता प्रहार कोई विवश, कदर्य जीव
जिसकी नसों में नहीं पौरुष की धार है
करुणा, क्षमा हैं वीर जाति के कलंक घोर
क्षमता क्षमा की शूरवीरों का शृंगार है।
प्रतिशोध से हैं होती शौर्य की शिखाएँ दीप्त
प्रतिशोध-हीनता नरों में महापाप है,
छोड़ प्रीति-वैर पीते मूक अपमान वे ही
जिनमें न शेष शूरता का वह्नि-ताप है
जेता के विभूषण सहिष्णुता-क्षमा हैं किंतु
हारी हुई जाति की सहिष्णुता अभिशाप है।
सेना साजहीन है परस्व हरने की वृत्ति
लोभ की लड़ाई क्षात्र धर्म के विरुद्ध है
चोट खा परंतु जब सिंह उठता है जाग
उठता कराल प्रतिशोध हो प्रबुद्ध है
पुण्य खिलता है चंद्रहास की विभा में तब
पौरुष की जागृति कहाती धर्मयुद्ध है।

प्रश्न (ग): सहिष्णुता को विभूषण और अभिशाप दोनों क्यों माना गया? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सहिष्णुता का अर्थ सहनशीलता है; उसका मूल्य विजय और पराधीन विवशता की स्थितियों में अलग होता है।
- उत्तर का आधार दिए गए पद्यांश या गद्यांश की पंक्तियाँ और उनका प्रसंगगत आशय है।

चरण 1: विजेता का विभूषण विजेता शत्रु को दंडित करने का सामर्थ्य रखता है। यदि वह इस स्थिति में सहिष्णुता और क्षमा अपनाता है, तो उससे उसकी उदारता प्रकट होती है। इसीलिए कवि कहता है कि जेता के विभूषण सहिष्णुता-क्षमा हैं।

चरण 2: पराजित का अभिशाप हारी हुई जाति यदि प्रतिकार का साहस जुटाने के बजाय अन्याय और अपमान सहती रहे, तो उसकी दुर्बलता तथा पराधीनता बनी रहती है। ऐसी विवश सहिष्णुता उसे आत्मसम्मान की रक्षा के लिए उठने से रोकती है; इसलिए उसे अभिशाप कहा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष विजेता की सामर्थ्यपूर्ण सहिष्णुता उदारता होने से विभूषण है; पराजित की विवश सहिष्णुता पराधीनता बनाए रखने से अभिशाप है।

त्वरित सुझाव: दोनों स्थितियों में सहने की क्रिया समान है; उत्तर में उसके पीछे की शक्ति या विवशता का अंतर बताइए।

1(घ). सहता प्रहार कोई विवश, कदर्य जीव
जिसकी नसों में नहीं पौरुष की धार है
करुणा, क्षमा हैं वीर जाति के कलंक घोर
क्षमता क्षमा की शूरवीरों का शृंगार है।
प्रतिशोध से हैं होती शौर्य की शिखाएँ दीप्त
प्रतिशोध-हीनता नरों में महापाप है,
छोड़ प्रीति-वैर पीते मूक अपमान वे ही
जिनमें न शेष शूरता का वह्नि-ताप है
जेता के विभूषण सहिष्णुता-क्षमा हैं किंतु
हारी हुई जाति की सहिष्णुता अभिशाप है।
सेना साजहीन है परस्व हरने की वृत्ति
लोभ की लड़ाई क्षात्र धर्म के विरुद्ध है
चोट खा परंतु जब सिंह उठता है जाग
उठता कराल प्रतिशोध हो प्रबुद्ध है
पुण्य खिलता है चंद्रहास की विभा में तब
पौरुष की जागृति कहाती धर्मयुद्ध है।
प्रश्न (घ): कैसा युद्ध धर्म के विरुद्ध माना गया है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पद्यांश युद्ध के मूल्यांकन का आधार उसका उद्देश्य मानता है।
- उत्तर का आधार दिए गए पद्यांश या गद्यांश की पंक्तियाँ और उनका प्रसंगगत आशय है।

चरण 1: पद्यांश का प्रमाण कवि स्पष्ट कहता है कि लोभ की लड़ाई क्षात्र धर्म के विरुद्ध है। यहाँ परस्व हरने की वृत्ति दूसरों की संपत्ति या अधिकार छीनने की इच्छा को प्रकट करती है। इसलिए स्वार्थ और लालच से किया गया आक्रमण निंदनीय माना गया है।

चरण 2: उद्देश्य का भेद दूसरों का धन हड़पने वाला युद्ध न्याय की रक्षा के लिए नहीं होता। वह लोभ और अन्याय को बढ़ाता है। इसके विपरीत, चोट खाकर अन्याय के प्रतिकार के लिए उठना पद्यांश में उचित माना गया है। अतः केवल युद्ध करना वीरता का प्रमाण नहीं; उसका उद्देश्य भी न्यायपूर्ण होना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष लोभवश दूसरों की संपत्ति और अधिकार छीनने के उद्देश्य से किया गया युद्ध धर्म के विरुद्ध है।

त्वरित सुझाव: धर्मविरुद्ध युद्ध का उत्तर देते समय लोभ और परस्व हरना दोनों संकेत जोड़ें।

1(ङ). सहता प्रहार कोई विवश, कदर्य जीव
जिसकी नसों में नहीं पौरुष की धार है
करुणा, क्षमा हैं वीर जाति के कलंक घोर
क्षमता क्षमा की शूरवीरों का शृंगार है।
प्रतिशोध से हैं होती शौर्य की शिखाएँ दीप्त
प्रतिशोध-हीनता नरों में महापाप है,
छोड़ प्रीति-वैर पीते मूक अपमान वे ही
जिनमें न शेष शूरता का वह्नि-ताप है
जेता के विभूषण सहिष्णुता-क्षमा हैं किंतु
हारी हुई जाति की सहिष्णुता अभिशाप है।
सेना साजहीन है परस्व हरने की वृत्ति
लोभ की लड़ाई क्षात्र धर्म के विरुद्ध है
चोट खा परंतु जब सिंह उठता है जाग
उठता कराल प्रतिशोध हो प्रबुद्ध है
पुण्य खिलता है चंद्रहास की विभा में तब
पौरुष की जागृति कहाती धर्मयुद्ध है।

प्रश्न (ङ): भाव स्पष्ट कीजिए - 'पौरुष की जागृति कहाती धर्मयुद्ध है।' [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पद्यांश में पौरुष अन्याय का प्रतिकार करने वाला साहस है और धर्मयुद्ध न्याय की रक्षा का संघर्ष।
- उत्तर का आधार दिए गए पद्यांश या गद्यांश की पंक्तियाँ और उनका प्रसंगगत आशय है।

चरण 1: पंक्ति का संदर्भ इससे पहले कवि चोट खाकर जाग उठे सिंह का उदाहरण देता है। वह बताता है कि अपमान और अत्याचार के विरुद्ध साहस का जागना आवश्यक है। यहाँ जागृति का आशय सोई हुई वीरता और स्वाभिमान के सक्रिय होने से है।

चरण 2: भाव का स्पष्टीकरण जब व्यक्ति या जाति अन्यायपूर्ण आघात का प्रतिकार करने तथा अपने सम्मान और अधिकारों को बचाने के लिए संघर्ष करती है, तब वह संघर्ष धर्मयुद्ध कहलाता है। उसका आधार पौरुष और न्याय है, लोभ नहीं। इसलिए पौरुष का यह जागरण उचित तथा पुण्यकारी माना गया है।

चरण 3: निष्कर्ष अन्याय और अत्याचार का प्रतिकार करने के लिए जागा हुआ साहस जब न्याय तथा आत्मसम्मान की रक्षा करता है, तो वही धर्मयुद्ध है।

त्वरित सुझाव: भावार्थ में शब्दार्थ भर न दें; अन्याय, साहस और न्यायपूर्ण संघर्ष के संबंध को स्पष्ट करें।

2(क). हिन्दी के बारे में या उसके विरोध के बारे में जब भी कोई हलचल होती है, तो राजनीति का मुखौटा ओढ़े रहने वाले भाषा व्यवसायी बेनकाब होने लगते हैं। उनकी बेचैनी समझ में नहीं आती। संविधान में स्पष्ट प्रावधानों के बाद भी यह अविश्वास का माहौल बनता क्यों है? यहाँ हम केवल एक ही प्रावधान को याद करें। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश देते हुए स्पष्ट कहा गया है : 'संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात् करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।'

यही सब देखकर हिन्दी के विषय में अक्सर यह लगने लगता है जैसे संविधान के संकल्पों का निष्कर्ष कहीं खो गया है और हम निर्माताओं के आशय से कहीं दूर भटक गए हैं। सहज ही मन में ये प्रश्न उठते हैं कि हमने संविधान के सपने को साकार करने के लिए क्या किया? क्यों नहीं हमारे कार्यक्रम प्रभावी हुए? क्यों और कैसे अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता हम पर और हमारी युवा एवं किशोर पीढ़ी पर इतनी हावी हो चुकी है कि इसी मिट्टी से जन्मी हमारी अपनी भाषाओं की अस्मिता और भविष्य संकट में प्रतीत होता है। शिक्षा में, व्यापार और व्यवहार में, संसदीय, शासकीय एवं न्यायिक प्रक्रियाओं में हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को वर्चस्व क्यों नहीं मिल पा रहा?

प्रश्न (क): भाषा व्यवसायी से क्या अभिप्राय है? उनकी पोल कब खुलने लगती है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश की आरंभिक पंक्तियों से भाषा व्यवसायियों की पहचान और उनके बेनकाब होने का अवसर समझना है।
- उत्तर का आधार दिए गए पद्यांश या गद्यांश की पंक्तियाँ और उनका प्रसंगगत आशय है।

चरण 1: भाषा व्यवसायी का अभिप्राय यहाँ भाषा व्यवसायी से अभिप्राय उन स्वार्थी लोगों से है जो भाषा के प्रश्न को अपने राजनीतिक या निजी हित साधने का माध्यम बनाते हैं। वे भाषा के वास्तविक विकास के बजाय राजनीति का मुखौटा ओढ़कर उसके समर्थन या विरोध का लाभ उठाना चाहते हैं। इस पद का आशय केवल भाषा पढ़ाने या भाषा संबंधी काम करके आजीविका कमाने वाले लोगों से नहीं है।

चरण 2: पोल खुलने की स्थिति गद्यांश में कहा गया है कि हिन्दी के बारे में या उसके विरोध में जब भी कोई हलचल होती है, तब ये लोग बेनकाब होने लगते हैं। ऐसी हलचल में उनकी बेचैनी और स्वार्थपूर्ण व्यवहार प्रकट हो जाते हैं। लेखक इसी बेचैनी पर प्रश्न करता है, क्योंकि संविधान में हिन्दी के विकास संबंधी स्पष्ट निर्देश पहले से मौजूद हैं। इस प्रकार उनका कथित भाषाप्रेम और वास्तविक राजनीतिक उद्देश्य अलग-अलग दिखाई देने लगते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष भाषा व्यवसायी वे लोग हैं जो भाषा के नाम पर राजनीतिक या निजी स्वार्थ साधते हैं। हिन्दी के समर्थन या विरोध में हलचल होते ही उनकी स्वार्थपूर्ण भूमिका और पोल खुलने लगती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दोनों हिस्से अलग रखें: पहले स्वार्थी लोगों की पहचान, फिर हिन्दी संबंधी हलचल का अवसर लिखें।

2(ख). हिन्दी के बारे में या उसके विरोध के बारे में जब भी कोई हलचल होती है, तो राजनीति का मुखौटा ओढ़े रहने वाले भाषा व्यवसायी बेनकाब होने लगते हैं। उनकी बेचैनी समझ में नहीं आती। संविधान में स्पष्ट प्रावधानों के बाद भी यह अविश्वास का माहौल बनता क्यों है? यहाँ हम केवल एक ही प्रावधान को याद करें। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश देते हुए स्पष्ट कहा गया है : 'संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात् करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।'

यही सब देखकर हिन्दी के विषय में अक्सर यह लगने लगता है जैसे संविधान के संकल्पों का निष्कर्ष कहीं खो गया है और हम निर्माताओं के आशय से कहीं दूर भटक गए हैं। सहज ही मन में ये प्रश्न उठते हैं कि हमने संविधान के सपने को साकार करने के लिए क्या किया? क्यों नहीं हमारे कार्यक्रम प्रभावी हुए? क्यों और कैसे अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता हम पर और हमारी युवा एवं किशोर पीढ़ी पर इतनी हावी हो चुकी है कि इसी मिट्टी से जन्मी हमारी अपनी भाषाओं की अस्मिता और भविष्य संकट में प्रतीत होता है। शिक्षा में, व्यापार और व्यवहार में, संसदीय, शासकीय एवं न्यायिक प्रक्रियाओं में हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को वर्चस्व क्यों नहीं मिल पा रहा?

प्रश्न (ख): संविधान में 'संघ' से आप क्या समझते हैं? हिन्दी भाषा को लेकर संघ का क्या कर्तव्य बताया गया है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संविधान के उद्धृत अनुच्छेद से संघ के दायित्व का अर्थ समझना है।
- उत्तर में संघ की पहचान और हिन्दी के विकास के निर्देश दोनों स्पष्ट होने चाहिए।

चरण 1: संघ का अर्थ संविधान के इस संदर्भ में संघ से आशय भारत की केंद्र सरकार से है। हिन्दी के प्रसार और विकास की जिम्मेदारी उसी को सौंपी गई है। यहाँ संघ किसी निजी संस्था या भाषायी संगठन का नाम नहीं है। गद्यांश में उद्धृत निर्देश पूरे देश की भाषायी तथा सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के विकास से संबंधित है।

चरण 2: हिन्दी संबंधी कर्तव्य संघ का कर्तव्य हिन्दी का प्रसार बढ़ाना तथा उसका ऐसा विकास करना है कि वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। हिन्दी की प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और आठवीं अनुसूची में निर्दिष्ट भारतीय भाषाओं के रूप, शैली तथा पद आत्मसात करने हैं। जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो, उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करके उसकी समृद्धि सुनिश्चित करनी है। इसलिए यह दायित्व केवल प्रचार तक सीमित नहीं है; इसमें हिन्दी की अभिव्यक्ति की क्षमता और शब्द-संपदा बढ़ाना भी सम्मिलित है।

चरण 3: निष्कर्ष संघ का अर्थ केंद्र सरकार है। उसे हिन्दी का प्रसार और विकास करके उसे भारतीय संस्कृति की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाना तथा अन्य भारतीय भाषाओं एवं मुख्यत: संस्कृत से शब्द ग्रहण करके समृद्ध करना है।

त्वरित सुझाव: पहले संघ का अर्थ लिखें, फिर प्रसार, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और शब्द-संपदा बढ़ाने के दायित्व जोड़ें।

2(ग). हिन्दी के बारे में या उसके विरोध के बारे में जब भी कोई हलचल होती है, तो राजनीति का मुखौटा ओढ़े रहने वाले भाषा व्यवसायी बेनकाब होने लगते हैं। उनकी बेचैनी समझ में नहीं आती। संविधान में स्पष्ट प्रावधानों के बाद भी यह अविश्वास का माहौल बनता क्यों है? यहाँ हम केवल एक ही प्रावधान को याद करें। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश देते हुए स्पष्ट कहा गया है : 'संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात् करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।'

यही सब देखकर हिन्दी के विषय में अक्सर यह लगने लगता है जैसे संविधान के संकल्पों का निष्कर्ष कहीं खो गया है और हम निर्माताओं के आशय से कहीं दूर भटक गए हैं। सहज ही मन में ये प्रश्न उठते हैं कि हमने संविधान के सपने को साकार करने के लिए क्या किया? क्यों नहीं हमारे कार्यक्रम प्रभावी हुए? क्यों और कैसे अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता हम पर और हमारी युवा एवं किशोर पीढ़ी पर इतनी हावी हो चुकी है कि इसी मिट्टी से जन्मी हमारी अपनी भाषाओं की अस्मिता और भविष्य संकट में प्रतीत होता है। शिक्षा में, व्यापार और व्यवहार में, संसदीय, शासकीय एवं न्यायिक प्रक्रियाओं में हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को वर्चस्व क्यों नहीं मिल पा रहा?

प्रश्न (ग): हिन्दी भाषा के विकास की आवश्यकता क्यों है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में हिन्दी के विकास को भारतीय संस्कृति की अभिव्यक्ति से जोड़ा गया है।
- उत्तर का आधार अनुच्छेद 351 में दिए गए प्रसार, विकास और समृद्धि के निर्देश हैं।

चरण 1: आवश्यकता का आधार लेखक के अनुसार हिन्दी का विकास इसलिए आवश्यक है कि वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों को व्यक्त करने में सक्षम बन सके। विविध सांस्कृतिक अनुभवों की अभिव्यक्ति के लिए भाषा में पर्याप्त शब्द, रूप और शैलियाँ होनी चाहिए। इसीलिए गद्यांश केवल हिन्दी के प्रचार की बात नहीं करता, उसके विकास पर भी बल देता है।

चरण 2: भाषिक समृद्धि का महत्त्व हिन्दी अपनी प्रकृति बनाए रखते हुए हिन्दुस्तानी और अन्य भारतीय भाषाओं के रूप, शैली तथा पदों को ग्रहण करे। आवश्यक शब्द मुख्यत: संस्कृत और गौणत: अन्य भाषाओं से लेकर उसका शब्द-भंडार समृद्ध हो। इस विकास से भारतीय संस्कृति को व्यक्त करने की उसकी क्षमता बढ़ेगी और संविधान में व्यक्त संकल्प को साकार किया जा सकेगा।

चरण 3: निष्कर्ष हिन्दी का विकास आवश्यक है ताकि वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का समर्थ माध्यम बन सके। अन्य भारतीय भाषाओं से उपयोगी रूप, शैली और शब्द ग्रहण करके उसकी अभिव्यक्ति-क्षमता तथा समृद्धि बढ़ाई जा सकती है।

त्वरित सुझाव: आवश्यकता पूछे जाने पर अनुच्छेद 351 में आए अभिव्यक्ति के उद्देश्य को पहले लिखें।

2(घ). हिन्दी के बारे में या उसके विरोध के बारे में जब भी कोई हलचल होती है, तो राजनीति का मुखौटा ओढ़े रहने वाले भाषा व्यवसायी बेनकाब होने लगते हैं। उनकी बेचैनी समझ में नहीं आती। संविधान में स्पष्ट प्रावधानों के बाद भी यह अविश्वास का माहौल बनता क्यों है? यहाँ हम केवल एक ही प्रावधान को याद करें। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश देते हुए स्पष्ट कहा गया है : 'संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात् करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।'

यही सब देखकर हिन्दी के विषय में अक्सर यह लगने लगता है जैसे संविधान के संकल्पों का निष्कर्ष कहीं खो गया है और हम निर्माताओं के आशय से कहीं दूर भटक गए हैं। सहज ही मन में ये प्रश्न उठते हैं कि हमने संविधान के सपने को साकार करने के लिए क्या किया? क्यों नहीं हमारे कार्यक्रम प्रभावी हुए? क्यों और कैसे अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता हम पर और हमारी युवा एवं किशोर पीढ़ी पर इतनी हावी हो चुकी है कि इसी मिट्टी से जन्मी हमारी अपनी भाषाओं की अस्मिता और भविष्य संकट में प्रतीत होता है। शिक्षा में, व्यापार और व्यवहार में, संसदीय, शासकीय एवं न्यायिक प्रक्रियाओं में हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को वर्चस्व क्यों नहीं मिल पा रहा?

प्रश्न (घ): भारत की अन्य भाषाओं से लेखक का क्या तात्पर्य है? यहाँ उनका उल्लेख क्यों हुआ है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग के आधार पर किसी पद का अर्थ निर्धारित करना इस प्रश्न का उद्देश्य है।
- अन्य भाषाओं का उल्लेख हिन्दी की समृद्धि और सांस्कृतिक समावेश के संदर्भ में हुआ है।

चरण 1: अन्य भाषाओं का अर्थ भारत की अन्य भाषाओं से लेखक का तात्पर्य संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित भारतीय भाषाओं से है। यहाँ संकेत हिन्दी के अतिरिक्त देश की उन भाषाओं की ओर है जिनमें विभिन्न क्षेत्रों के लोगों की सांस्कृतिक अनुभूतियाँ और भाषिक विशेषताएँ व्यक्त होती हैं। इन्हें किसी विदेशी भाषा का पर्याय समझना प्रसंग के अनुकूल नहीं है।

चरण 2: उल्लेख का प्रयोजन अनुच्छेद 351 के उद्धरण में इन भाषाओं का उल्लेख इसलिए है कि हिन्दी उनके प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात् करके समृद्ध बने। लेखक भारतीय भाषाओं के पारस्परिक सहयोग को सामने रखता है। इस ग्रहण-प्रक्रिया में हिन्दी की अपनी प्रकृति से छेड़छाड़ न हो और वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके।

चरण 3: निष्कर्ष अन्य भाषाओं से आशय आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारतीय भाषाओं से है। उनका उल्लेख इसलिए हुआ है कि हिन्दी उनकी रूप-शैली और पदों को ग्रहण कर अपनी प्रकृति बनाए रखते हुए समृद्ध हो तथा भारतीय संस्कृति की व्यापक अभिव्यक्ति कर सके।

त्वरित सुझाव: इस उत्तर में पहले भाषाओं की पहचान और फिर हिन्दी को उनसे मिलने वाला योगदान लिखें।

2(ङ). हिन्दी के बारे में या उसके विरोध के बारे में जब भी कोई हलचल होती है, तो राजनीति का मुखौटा ओढ़े रहने वाले भाषा व्यवसायी बेनकाब होने लगते हैं। उनकी बेचैनी समझ में नहीं आती। संविधान में स्पष्ट प्रावधानों के बाद भी यह अविश्वास का माहौल बनता क्यों है? यहाँ हम केवल एक ही प्रावधान को याद करें। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश देते हुए स्पष्ट कहा गया है : 'संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात् करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।'

यही सब देखकर हिन्दी के विषय में अक्सर यह लगने लगता है जैसे संविधान के संकल्पों का निष्कर्ष कहीं खो गया है और हम निर्माताओं के आशय से कहीं दूर भटक गए हैं। सहज ही मन में ये प्रश्न उठते हैं कि हमने संविधान के सपने को साकार करने के लिए क्या किया? क्यों नहीं हमारे कार्यक्रम प्रभावी हुए? क्यों और कैसे अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता हम पर और हमारी युवा एवं किशोर पीढ़ी पर इतनी हावी हो चुकी है कि इसी मिट्टी से जन्मी हमारी अपनी भाषाओं की अस्मिता और भविष्य संकट में प्रतीत होता है। शिक्षा में, व्यापार और व्यवहार में, संसदीय, शासकीय एवं न्यायिक प्रक्रियाओं में हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को वर्चस्व क्यों नहीं मिल पा रहा?

प्रश्न (ङ): 'अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता' से क्या तात्पर्य है? उसका क्या परिणाम हो रहा है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भावार्थ में शब्दों का शाब्दिक अर्थ नहीं, प्रसंग में व्यक्त दृष्टिकोण स्पष्ट किया जाता है।
- उत्तर में मानसिकता का अर्थ तथा भारतीय भाषाओं पर उसका परिणाम अलग-अलग बताना है।

चरण 1: मानसिकता का आशय अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता से तात्पर्य अंग्रेज़ी के प्रति ऐसे मोह और उसे अधिक महत्त्व देने वाले दृष्टिकोण से है जिसके कारण अपनी भारतीय भाषाएँ उपेक्षित होती हैं। यहाँ लेखक केवल अंग्रेज़ी जानने का विरोध नहीं कर रहा; उसकी चिंता उस प्रभाव को लेकर है जो अंग्रेज़ी को हमारी सोच और व्यवहार पर हावी कर देता है।

चरण 2: उसका परिणाम यह मानसिकता हमारी युवा और किशोर पीढ़ी को भी प्रभावित कर रही है। फलत: इसी देश में जन्मी हिन्दी तथा प्रादेशिक भाषाओं की अस्मिता और भविष्य संकट में दिखाई देते हैं। शिक्षा, व्यापार, व्यवहार, संसद, शासन तथा न्याय की प्रक्रियाओं में अपनी भाषाओं को अपेक्षित प्रमुखता नहीं मिल पा रही। यही स्थिति लेखक की चिंता और प्रश्नों का मूल कारण है।

चरण 3: निष्कर्ष अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता का अर्थ अंग्रेज़ी को अत्यधिक महत्त्व देकर अपनी भाषाओं की उपेक्षा करने वाला दृष्टिकोण है। इसके प्रभाव से युवा और किशोर पीढ़ी अपनी भाषाओं से दूर हो रही है तथा हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं की पहचान, भविष्य और व्यवहारगत प्रतिष्ठा संकट में पड़ रही है।

त्वरित सुझाव: मानसिकता का अर्थ बताते समय अंग्रेज़ी का ज्ञान और अंग्रेज़ी के प्रति अंधमोह में अंतर स्पष्ट रखें।

2(च). हिन्दी के बारे में या उसके विरोध के बारे में जब भी कोई हलचल होती है, तो राजनीति का मुखौटा ओढ़े रहने वाले भाषा व्यवसायी बेनकाब होने लगते हैं। उनकी बेचैनी समझ में नहीं आती। संविधान में स्पष्ट प्रावधानों के बाद भी यह अविश्वास का माहौल बनता क्यों है? यहाँ हम केवल एक ही प्रावधान को याद करें। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश देते हुए स्पष्ट कहा गया है : 'संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात् करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।'

यही सब देखकर हिन्दी के विषय में अक्सर यह लगने लगता है जैसे संविधान के संकल्पों का निष्कर्ष कहीं खो गया है और हम निर्माताओं के आशय से कहीं दूर भटक गए हैं। सहज ही मन में ये प्रश्न उठते हैं कि हमने संविधान के सपने को साकार करने के लिए क्या किया? क्यों नहीं हमारे कार्यक्रम प्रभावी हुए? क्यों और कैसे अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता हम पर और हमारी युवा एवं किशोर पीढ़ी पर इतनी हावी हो चुकी है कि इसी मिट्टी से जन्मी हमारी अपनी भाषाओं की अस्मिता और भविष्य संकट में प्रतीत होता है। शिक्षा में, व्यापार और व्यवहार में, संसदीय, शासकीय एवं न्यायिक प्रक्रियाओं में हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को वर्चस्व क्यों नहीं मिल पा रहा?

प्रश्न (च): यह कैसे कह सकते हैं कि हमारी अपनी भाषा का भविष्य संकट में है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी कथन की पुष्टि के लिए गद्यांश में दिए गए लक्षणों को आधार बनाना चाहिए।
- यहाँ भाषाओं के संकट के प्रमाण नई पीढ़ी की मानसिकता और सार्वजनिक उपयोग की स्थिति हैं।

चरण 1: पीढ़ी पर प्रभाव का प्रमाण लेखक बताता है कि अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता हम पर ही नहीं, युवा और किशोर पीढ़ी पर भी बहुत हावी हो चुकी है। इस कारण अपनी मिट्टी से जन्मी भाषाओं की अस्मिता और भविष्य संकट में प्रतीत होते हैं। नई पीढ़ी पर ऐसा प्रभाव भाषा की आगे की स्थिति के विषय में चिंता पैदा करता है।

चरण 2: व्यवहार में उपेक्षा का प्रमाण संवैधानिक संकल्पों और विकास के कार्यक्रमों के बावजूद हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को शिक्षा, व्यापार तथा सामान्य व्यवहार में अपेक्षित प्रमुखता नहीं मिली है। संसदीय, शासकीय और न्यायिक प्रक्रियाओं में भी उनका वर्चस्व नहीं बन पाया। लेखक इन्हीं स्थितियों को देखकर पूछता है कि संविधान के सपने को साकार करने के लिए हमने क्या किया। इस अंतर से भाषा के भविष्य का संकट स्पष्ट होता है।

चरण 3: निष्कर्ष अंग्रेज़ी की मानसिकता युवा और किशोर पीढ़ी पर हावी हो रही है, जिससे अपनी भाषाओं की अस्मिता संकट में दिखाई देती है। साथ ही शिक्षा, व्यापार, शासन, संसद और न्यायिक प्रक्रियाओं में हिन्दी तथा प्रादेशिक भाषाओं को अपेक्षित प्रमुख स्थान नहीं मिल पा रहा; इसलिए उनके भविष्य पर संकट कहा गया है।

त्वरित सुझाव: संकट की पुष्टि करते समय नई पीढ़ी पर प्रभाव और प्रमुख क्षेत्रों में उपेक्षा, दोनों प्रमाण दें।

2(छ). हिन्दी के बारे में या उसके विरोध के बारे में जब भी कोई हलचल होती है, तो राजनीति का मुखौटा ओढ़े रहने वाले भाषा व्यवसायी बेनकाब होने लगते हैं। उनकी बेचैनी समझ में नहीं आती। संविधान में स्पष्ट प्रावधानों के बाद भी यह अविश्वास का माहौल बनता क्यों है? यहाँ हम केवल एक ही प्रावधान को याद करें। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश देते हुए स्पष्ट कहा गया है : 'संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात् करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।'

यही सब देखकर हिन्दी के विषय में अक्सर यह लगने लगता है जैसे संविधान के संकल्पों का निष्कर्ष कहीं खो गया है और हम निर्माताओं के आशय से कहीं दूर भटक गए हैं। सहज ही मन में ये प्रश्न उठते हैं कि हमने संविधान के सपने को साकार करने के लिए क्या किया? क्यों नहीं हमारे कार्यक्रम प्रभावी हुए? क्यों और कैसे अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता हम पर और हमारी युवा एवं किशोर पीढ़ी पर इतनी हावी हो चुकी है कि इसी मिट्टी से जन्मी हमारी अपनी भाषाओं की अस्मिता और भविष्य संकट में प्रतीत होता है। शिक्षा में, व्यापार और व्यवहार में, संसदीय, शासकीय एवं न्यायिक प्रक्रियाओं में हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को वर्चस्व क्यों नहीं मिल पा रहा?

प्रश्न (छ): हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं के वर्चस्व से आप क्या समझते हैं? यह कैसे संभव हो सकता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- वर्चस्व का प्रसंगानुकूल अर्थ व्यवहार और सार्वजनिक कार्यों में प्रमुख स्थान होना है।
- समाधान गद्यांश के संवैधानिक निर्देश और उनके प्रभावी क्रियान्वयन से निकलता है।

चरण 1: वर्चस्व का अर्थ हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं के वर्चस्व का अर्थ है कि शिक्षा, व्यापार, व्यवहार, संसदीय, शासकीय तथा न्यायिक प्रक्रियाओं में इन्हें प्रमुख और सम्मानपूर्ण स्थान मिले। लोग इन भाषाओं में अपने विचार व्यक्त कर सकें और आवश्यक कार्य कर सकें। लेखक इन्हीं क्षेत्रों में भारतीय भाषाओं की अपेक्षित स्थिति न होने पर चिंता करता है।

चरण 2: वर्चस्व स्थापित करने का उपाय यह संविधान के भाषाई संकल्पों को व्यवहार में उतारने और भाषा-विकास के कार्यक्रमों को प्रभावी बनाने से संभव है। अपनी भाषाओं के प्रति उपेक्षा दूर कर शिक्षा और सार्वजनिक कामकाज में उनका वास्तविक प्रयोग बढ़ाना होगा। साथ ही हिन्दी की प्रकृति बनाए रखते हुए अन्य भारतीय भाषाओं के उपयोगी रूप, शैली और शब्द ग्रहण करके उसे समृद्ध करना होगा, ताकि उसकी अभिव्यक्ति की क्षमता व्यापक बने।

चरण 3: निष्कर्ष वर्चस्व से आशय शिक्षा और सार्वजनिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हिन्दी तथा प्रादेशिक भाषाओं की प्रमुख भूमिका से है। यह संवैधानिक निर्देशों के प्रभावी पालन, भाषाओं के विकास तथा शिक्षा, शासन, न्याय और व्यापार में उनके अधिकाधिक वास्तविक उपयोग से संभव हो सकता है।

त्वरित सुझाव: वर्चस्व का अर्थ बताकर गद्यांश में दिए उपयोग-क्षेत्रों से जुड़ा व्यावहारिक उपाय लिखें।

2(ज). हिन्दी के बारे में या उसके विरोध के बारे में जब भी कोई हलचल होती है, तो राजनीति का मुखौटा ओढ़े रहने वाले भाषा व्यवसायी बेनकाब होने लगते हैं। उनकी बेचैनी समझ में नहीं आती। संविधान में स्पष्ट प्रावधानों के बाद भी यह अविश्वास का माहौल बनता क्यों है? यहाँ हम केवल एक ही प्रावधान को याद करें। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश देते हुए स्पष्ट कहा गया है : 'संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात् करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।'

यही सब देखकर हिन्दी के विषय में अक्सर यह लगने लगता है जैसे संविधान के संकल्पों का निष्कर्ष कहीं खो गया है और हम निर्माताओं के आशय से कहीं दूर भटक गए हैं। सहज ही मन में ये प्रश्न उठते हैं कि हमने संविधान के सपने को साकार करने के लिए क्या किया? क्यों नहीं हमारे कार्यक्रम प्रभावी हुए? क्यों और कैसे अंग्रेज़ी भाषा की मानसिकता हम पर और हमारी युवा एवं किशोर पीढ़ी पर इतनी हावी हो चुकी है कि इसी मिट्टी से जन्मी हमारी अपनी भाषाओं की अस्मिता और भविष्य संकट में प्रतीत होता है। शिक्षा में, व्यापार और व्यवहार में, संसदीय, शासकीय एवं न्यायिक प्रक्रियाओं में हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को वर्चस्व क्यों नहीं मिल पा रहा?

प्रश्न (ज): गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शीर्षक गद्यांश के केंद्रीय विचार को संक्षेप में व्यक्त करता है।
- यहाँ केंद्र में हिन्दी के संवैधानिक विकास-संकल्प और उसकी वर्तमान स्थिति की चिंता है।

चरण 1: केंद्रीय विचार पहचानें गद्यांश में पहले हिन्दी के विकास संबंधी संवैधानिक निर्देश दिए गए हैं। फिर लेखक भारतीय भाषाओं की उपेक्षा, अंग्रेज़ी के प्रभाव और हिन्दी को अपेक्षित स्थान न मिलने पर चिंता व्यक्त करता है।

चरण 2: शीर्षक का चयन शीर्षक में हिन्दी का विकास और उससे जुड़ी समस्या, दोनों का संकेत होना चाहिए। केवल अंग्रेज़ी भाषा या केवल संविधान कहने से गद्यांश का पूरा आशय सामने नहीं आता। इसलिए हिन्दी के विकास की चुनौती को केंद्र में रखना उचित है।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक है : 'हिन्दी का विकास : संकल्प और चुनौतियाँ'।

त्वरित सुझाव: शीर्षक में पूरे गद्यांश का केंद्रीय विषय समेटें; केवल किसी एक उदाहरण को शीर्षक न बनाएँ।

---

3. दूरदर्शन केन्द्र के निदेशक को नवीन साहित्यिक रचनाओं पर कार्यक्रम प्रसारित करने का आग्रह करते हुए लगभग 150 शब्दों में पत्र लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- औपचारिक पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता का पद और पता, विषय, संबोधन, मुख्य निवेदन तथा विनम्र समापन क्रम से आते हैं।
- उद्देश्य नवीन साहित्यिक रचनाओं के प्रसारण का आग्रह करना है। भाषा विनम्र और स्पष्ट हो तथा सुझाव व्यावहारिक हों।

चरण 1: प्रारूप तथा विषय की योजना निदेशक को संबोधित पत्र में पहले साहित्यिक कार्यक्रम की आवश्यकता बताएँगे। फिर रचनापाठ, पुस्तक-परिचर्चा और लेखकों से बातचीत जैसे सुझाव देंगे। अंत में नियमित प्रसारण का अनुरोध होगा। काल्पनिक प्रेषक और पता केवल पत्र का आवश्यक प्रारूप पूरा करते हैं। मुख्य भाग को लगभग 150 शब्दों में रखेंगे।

चरण 2: पूर्ण नमूना पत्र 25, विकास नगर
नई दिल्ली – 110018
12 मार्च, 2018
सेवा में,

निदेशक महोदय,
दूरदर्शन केन्द्र, नई दिल्ली।
विषय : नवीन साहित्यिक रचनाओं पर कार्यक्रम प्रसारित करने हेतु आग्रह।
महोदय,
मैं आपके लोकप्रिय माध्यम से नवीन साहित्यिक रचनाओं पर नियमित कार्यक्रम प्रसारित करने का अनुरोध करना चाहता हूँ। आज अनेक उत्कृष्ट कहानियाँ, कविताएँ और उपन्यास प्रकाशित हो रहे हैं, किंतु सामान्य दर्शकों को उनके विषय में पर्याप्त जानकारी नहीं मिल पाती। विशेषकर युवा पीढ़ी मनोरंजन के अनेक साधनों के बीच साहित्य से दूर होती जा रही है।

यदि दूरदर्शन सप्ताह में एक दिन नवीन पुस्तकों की परिचर्चा, रचनापाठ तथा लेखकों से संवाद प्रस्तुत करे, तो दर्शकों की साहित्य में रुचि बढ़ेगी। कार्यक्रम में विभिन्न भारतीय भाषाओं की अनूदित कृतियों और युवा रचनाकारों को भी स्थान दिया जाए। पुस्तकालयों एवं शिक्षण संस्थानों से सहयोग लेकर दर्शकों के प्रश्न भी शामिल किए जा सकते हैं। इससे स्वस्थ पठन-संस्कृति विकसित होगी और साहित्यिक विविधता से परिचय मिलेगा।

आशा है, आप इस सुझाव पर विचार करके उपयुक्त समय पर ऐसा कार्यक्रम आरंभ करेंगे। इसके लिए हम साहित्यप्रेमी आपके आभारी रहेंगे।
धन्यवाद।
भवदीय,
अजय कुमार

चरण 3: निष्कर्ष पत्र में नवीन साहित्यिक रचनाओं पर कार्यक्रम का स्पष्ट आग्रह, उसके लाभ और उपयोगी सुझाव उचित औपचारिक प्रारूप में प्रस्तुत हैं।

त्वरित सुझाव: विषय-पंक्ति में आग्रह स्पष्ट लिखें और मुख्य भाग में प्रसारण के दो ठोस सुझाव अवश्य दें।

4(क). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए : कम्प्यूटर : मेरे जीवन में [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुच्छेद एक केंद्रीय विचार को क्रमबद्ध रूप में विकसित करता है। इस विषय में कम्प्यूटर की सामान्य परिभाषा के बजाय अपने दैनिक जीवन में उसकी भूमिका स्पष्ट करनी है।
- लगभग 150 शब्दों के लेखन में उपयोग, लाभ, सावधानी और व्यक्तिगत निष्कर्ष को परस्पर जोड़ना चाहिए। सरल भाषा तथा विचारों की एकता आवश्यक है।

चरण 1: विषय-विस्तार की योजना आरंभ में कम्प्यूटर को अपने जीवन का उपयोगी साधन बताएँगे। मध्य में पढ़ाई, जानकारी, सृजनात्मक कार्य और संचार के उदाहरण रखेंगे। अंत में सीमित उपयोग, विश्वसनीय जानकारी और सुरक्षा का ध्यान रखने की बात आएगी। प्रश्न व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित है, इसलिए प्रथम पुरुष का प्रयोग उपयुक्त है। शीर्षक के बाद पूरा नमूना एक ही अनुच्छेद में दिया गया है।

चरण 2: पूर्ण नमूना अनुच्छेद **कम्प्यूटर : मेरे जीवन में**

कम्प्यूटर मेरे जीवन का एक उपयोगी साथी बन गया है। पढ़ाई से लेकर सृजनात्मक कार्यों तक यह मेरी अनेक आवश्यकताएँ पूरी करता है। कठिन विषय समझने के लिए मैं इसकी सहायता से शैक्षिक सामग्री देखता हूँ और आवश्यक जानकारी खोजता हूँ। परियोजनाएँ तैयार करना, लेख लिखना तथा चित्र बनाना इसके कारण सरल हो गया है। अपनी रचनाओं में सुधार करके उन्हें सुरक्षित रखने की सुविधा भी मुझे बहुत उपयोगी लगती है। दूर रहने वाले संबंधियों से बातचीत करने और आवश्यक संदेश भेजने में भी यह सहायक है। कभी-कभी मैं इस पर संगीत सुनकर मनोरंजन करता हूँ। फिर भी मैं समझता हूँ कि कम्प्यूटर का अत्यधिक प्रयोग समय और स्वास्थ्य दोनों को प्रभावित कर सकता है। इसलिए मैं निश्चित समय तक ही इसका उपयोग करता हूँ और बीच-बीच में विश्राम लेता हूँ। इंटरनेट से मिली जानकारी की विश्वसनीयता जाँचना तथा निजी सूचनाएँ सुरक्षित रखना भी जरूरी है। मेरे लिए कम्प्यूटर सीखने और आगे बढ़ने का साधन है।

चरण 3: निष्कर्ष अनुच्छेद में कम्प्यूटर के शैक्षिक, रचनात्मक और संचार संबंधी उपयोगों के साथ जिम्मेदार प्रयोग का व्यक्तिगत दृष्टिकोण भी प्रस्तुत है।

त्वरित सुझाव: 'मेरे जीवन में' विषय को ध्यान में रखकर 'मैं' और 'मेरे' के साथ ठोस दैनिक उदाहरण दें; केवल आविष्कार का इतिहास न लिखें।

4(ख). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए : भारत की सामाजिक समस्याएँ [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुच्छेद में विषय का संक्षिप्त परिचय, मुख्य समस्याओं का विवेचन और समाधान का संकेत एक ही क्रम में दिया जाता है।
- भारत की सामाजिक समस्याओं पर लिखते समय समानता, शिक्षा और नागरिक उत्तरदायित्व को केंद्रीय विचार बनाना चाहिए।

चरण 1: विषय और प्रारूप की योजना शीर्षक के नीचे एक सुसंबद्ध अनुच्छेद लिखा जाएगा। आरंभ में भारत की विविधता और सामाजिक प्रगति का उल्लेख, मध्य में प्रमुख समस्याएँ तथा उनके प्रभाव और अंत में व्यावहारिक समाधान रखे जाएँगे। भाषा तथ्यपरक और संतुलित रहेगी; किसी समुदाय को दोष देने के स्थान पर सामाजिक कुरीतियों की आलोचना की जाएगी।

चरण 2: संपूर्ण आदर्श अनुच्छेद **भारत की सामाजिक समस्याएँ**

भारत विविध संस्कृतियों और परंपराओं का देश है, फिर भी अनेक सामाजिक समस्याएँ उसकी प्रगति में बाधक हैं। जातिगत भेदभाव, दहेज, लैंगिक असमानता, बालश्रम और अशिक्षा आज भी लाखों लोगों का जीवन कठिन बनाते हैं। गरीबी तथा बेरोजगारी इन समस्याओं को और गंभीर करती हैं। दहेज के कारण बेटियों को बोझ समझना और शिक्षा से वंचित बच्चों से काम कराना समाज की संवेदनहीनता के उदाहरण हैं। केवल कानून बना देने से इन बुराइयों का अंत नहीं होगा; लोगों की सोच बदलना भी आवश्यक है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता और रोजगार के अवसर सामाजिक सुधार के प्रभावी साधन हैं। परिवारों को बच्चों में समानता, श्रम के सम्मान और सहिष्णुता के संस्कार विकसित करने चाहिए। नागरिकों को अन्याय देखकर चुप रहने के बजाय उसका विरोध करना चाहिए। सरकार, सामाजिक संस्थाएँ और युवा मिलकर प्रयास करें, तो भारत अधिक न्यायपूर्ण तथा मानवीय समाज बन सकता है। सामाजिक परिवर्तन की शुरुआत हमारे अपने व्यवहार से होती है।

चरण 3: निष्कर्ष यह अनुच्छेद भारत की प्रमुख सामाजिक समस्याओं, उनके प्रभावों और समाधान को लगभग 150 शब्दों के सुसंगत रूप में प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: समस्याओं की केवल सूची न लिखें; दो ठोस उदाहरणों के साथ समाधान और नागरिक दायित्व भी जोड़ें।

4(ग). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए : स्वाभिमान चाहिए, अभिमान नहीं [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- स्वाभिमान अपने सम्मान और मूल्यों की रक्षा है; अभिमान अपने को दूसरों से श्रेष्ठ मानने की प्रवृत्ति है।
- विचारात्मक अनुच्छेद में केंद्रीय विचार को स्पष्ट भेद, व्यावहारिक उदाहरण और सार्थक निष्कर्ष से पुष्ट किया जाता है।

चरण 1: प्रारूप और विचारों का क्रम शीर्षक के बाद एक ही अनुच्छेद में लगभग 150 शब्दों का उत्तर लिखा जाएगा। पहले स्वाभिमान का अर्थ स्पष्ट करेंगे, फिर अभिमान से उसका अंतर बताएँगे। इसके बाद सफलता, आलोचना और आत्मसम्मान से जुड़े उदाहरण देकर विनम्रता तथा दृढ़ता के संतुलन पर विचार पूरा करेंगे।

चरण 2: संपूर्ण आदर्श अनुच्छेद **स्वाभिमान चाहिए, अभिमान नहीं**

स्वाभिमान मनुष्य के व्यक्तित्व की शक्ति है, जबकि अभिमान उसकी कमजोरी। स्वाभिमानी व्यक्ति अपनी गरिमा और सिद्धांतों की रक्षा करता है, पर दूसरों के सम्मान को ठेस नहीं पहुँचाता। इसके विपरीत, अभिमानी व्यक्ति स्वयं को श्रेष्ठ समझकर दूसरों की उपेक्षा करता

है। सफलता मिलने पर विनम्र रहना स्वाभिमान है; अपनी उपलब्धियों का प्रदर्शन करके किसी को नीचा दिखाना अभिमान है। विद्यार्थी को अपने परिश्रम और योग्यता पर विश्वास होना चाहिए, लेकिन उसे सहपाठियों की क्षमताओं का भी आदर करना चाहिए। स्वाभिमान हमें अन्याय के सामने झुकने से रोकता है और कठिन परिस्थितियों में आत्मनिर्भर बनाता है। अभिमान सीखने के द्वार बंद कर देता है, क्योंकि अहंकारी व्यक्ति अपनी भूल स्वीकार नहीं करता। इसलिए प्रशंसा मिलने पर संयम और आलोचना मिलने पर आत्मचिंतन आवश्यक है। सच्चा सम्मान पद या धन से नहीं, अच्छे आचरण से मिलता है। हमें अपने अधिकारों के प्रति सजग रहते हुए दूसरों के अधिकारों का सम्मान करना चाहिए। विनम्रता से जुड़ा स्वाभिमान ही जीवन को गरिमा देता है।

चरण 3: निष्कर्ष आदर्श अनुच्छेद आत्मसम्मान और अहंकार का अंतर स्पष्ट करते हुए विनम्रता, आत्मविश्वास और दूसरों के सम्मान का संदेश देता है।

त्वरित सुझाव: स्वाभिमान और अभिमान का अंतर केवल परिभाषा से नहीं, सफलता या आलोचना के प्रति व्यवहार के उदाहरण से स्पष्ट करें।

4(घ). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 150 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए : विकास के लिए शिक्षा आवश्यक [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुच्छेद में एक केंद्रीय विचार को क्रमबद्ध और सुसंगत रूप में विकसित किया जाता है।
- इस विषय का केंद्र शिक्षा और व्यक्ति तथा समाज के विकास का संबंध है।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति शीर्षक के बाद एक ही अनुच्छेद में शिक्षा का महत्त्व, उसके व्यावहारिक लाभ, सामाजिक प्रभाव और निष्कर्ष प्रस्तुत करेंगे। लगभग 150 शब्दों के मॉडल अनुच्छेद में विचारों को जोड़ते हुए सरल और प्रभावपूर्ण भाषा रखेंगे। विकास को केवल आर्थिक उन्नति तक सीमित नहीं रखेंगे; उसमें विवेक, समानता, स्वास्थ्य और नागरिक दायित्व भी सम्मिलित होंगे।

चरण 2: मॉडल अनुच्छेद **विकास के लिए शिक्षा आवश्यक**

शिक्षा व्यक्ति और समाज के विकास की आधारशिला है। यह केवल अक्षरज्ञान या परीक्षा में सफलता प्राप्त करने का साधन नहीं, बल्कि सोचने, समझने और उचित निर्णय लेने की क्षमता विकसित करती है। शिक्षित व्यक्ति अपने अधिकारों के साथ कर्तव्यों को भी पहचानता है। वह स्वास्थ्य, स्वच्छता और पर्यावरण के प्रति जागरूक होकर जीवन की गुणवत्ता सुधारता है। शिक्षा से कौशल बढ़ते हैं, रोजगार के अवसर मिलते हैं और उत्पादन में नवीनता आती है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण अंधविश्वासों को दूर करता है तथा सामाजिक समानता को बल देता है। विशेष रूप से बालिकाओं की शिक्षा परिवार और समाज दोनों को आगे बढ़ाती है। किंतु वास्तविक विकास के लिए शिक्षा गुणवत्तापूर्ण, सुलभ और जीवनोपयोगी होनी चाहिए। विद्यालयों में नैतिक मूल्यों, व्यावहारिक कौशल और संवेदनशीलता को भी स्थान मिलना चाहिए। अतः प्रत्येक बच्चे तक अच्छी शिक्षा पहुँचाना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है। शिक्षा में किया गया निवेश ही समृद्ध, न्यायपूर्ण और आत्मनिर्भर राष्ट्र का आधार बनता है।

चरण 3: निष्कर्ष यह अनुच्छेद शिक्षा को व्यक्तिगत उन्नति, सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय विकास से जोड़ते हुए सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की आवश्यकता स्पष्ट करता है।

त्वरित सुझाव: अनुच्छेद में शिक्षा के आर्थिक, सामाजिक और नैतिक लाभ जोड़ें तथा अंत में सभी तक शिक्षा पहुँचाने का संकल्प रखें।

5(क). विशेषीकृत पत्रकारिता को संक्षेप में समझाइए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न पत्रकारिता की मूल अवधारणा और उसकी पहचान का संक्षिप्त स्पष्टीकरण माँगता है।
- उत्तर में परिभाषा के साथ उसका निर्णायक लक्षण स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: मूल आशय किसी विशिष्ट विषय या क्षेत्र की गहन जानकारी के आधार पर की जाने वाली पत्रकारिता विशेषीकृत पत्रकारिता कहलाती है।

चरण 2: स्पष्टीकरण इसमें अर्थव्यवस्था, विज्ञान, खेल, कृषि या कानून जैसे क्षेत्रों से संबंधित घटनाओं की रिपोर्टिंग और विश्लेषण किया जाता है। पत्रकार विषय की पृष्ठभूमि और तकनीकी पक्ष समझकर पाठक को तथ्यपूर्ण जानकारी देता है।

चरण 3: निष्कर्ष विशेषीकृत पत्रकारिता में विषय का विशेष ज्ञान और गहन विश्लेषण प्रमुख होते हैं।

त्वरित सुझाव: परिभाषा लिखते समय संबंधित क्षेत्र की खास पहचान स्पष्ट करें और एक उपयुक्त उदाहरण से अर्थ समझाएँ।

5(ख). 'बीट' से आप क्या समझते हैं? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न पत्रकारिता की मूल अवधारणा और उसकी पहचान का संक्षिप्त स्पष्टीकरण माँगता है।
- उत्तर में परिभाषा के साथ उसका निर्णायक लक्षण स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: मूल आशय पत्रकार को नियमित समाचार-संग्रह और रिपोर्टिंग के लिए सौंपा गया निश्चित क्षेत्र या विभाग 'बीट' कहलाता है।

चरण 2: स्पष्टीकरण जैसे किसी संवाददाता को शिक्षा, पुलिस, न्यायालय या नगर निगम की बीट दी जा सकती है। वह अपने क्षेत्र के स्रोतों से नियमित संपर्क रखता है और उससे जुड़ी घटनाओं तथा गतिविधियों की खबरें जुटाता है।

चरण 3: निष्कर्ष बीट पत्रकार का निर्धारित समाचार-संग्रह क्षेत्र है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा लिखते समय संबंधित क्षेत्र की खास पहचान स्पष्ट करें और एक उपयुक्त उदाहरण से अर्थ समझाएँ।

5(ग). रेडियो की लोकप्रियता के क्या कारण हैं? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न पत्रकारिता की मूल अवधारणा और उसकी पहचान का संक्षिप्त स्पष्टीकरण माँगता है।
- उत्तर में परिभाषा के साथ उसका निर्णायक लक्षण स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: मूल आशय रेडियो सस्ता, सुगम और श्रव्य माध्यम है; इसे सुनने के लिए पढ़ना-लिखना आना आवश्यक नहीं है।

चरण 2: स्पष्टीकरण इसे काम करते हुए और यात्रा के समय भी सुना जा सकता है। दूरदराज के क्षेत्रों तक इसकी पहुँच, समाचारों का त्वरित प्रसारण और स्थानीय भाषाओं में सूचना तथा मनोरंजन देने की क्षमता इसे लोकप्रिय बनाती है।

चरण 3: निष्कर्ष कम खर्च, व्यापक पहुँच और सुनने की सुविधा रेडियो की लोकप्रियता के मुख्य कारण हैं।

त्वरित सुझाव: रेडियो की लोकप्रियता बताते समय सस्ता माध्यम, निरक्षर श्रोताओं तक पहुँच और काम करते हुए सुनने की सुविधा अवश्य जोड़ें।

5(घ). 'पेज थ्री पत्रकारिता' का आशय समझाइए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न पत्रकारिता की मूल अवधारणा और उसकी पहचान का संक्षिप्त स्पष्टीकरण माँगता है।
- उत्तर में परिभाषा के साथ उसका निर्णायक लक्षण स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: मूल आशय फिल्मी हस्तियों, फैशन और उच्चवर्गीय समाज की पार्टियों तथा निजी जीवन से संबंधित चमक-दमक भरी खबरों की प्रस्तुति को 'पेज थ्री पत्रकारिता' कहते हैं।

चरण 2: स्पष्टीकरण इसमें चर्चित लोगों के सामाजिक समारोहों, जीवनशैली और मनोरंजन जगत की गतिविधियों को प्रमुखता दी जाती है। इसका नाम समाचारपत्रों के तीसरे पृष्ठ पर ऐसी सामग्री प्रकाशित करने की प्रचलित परंपरा से जुड़ा है।

चरण 3: निष्कर्ष पेज थ्री पत्रकारिता का केंद्र चर्चित हस्तियों की जीवनशैली और सामाजिक गतिविधियाँ हैं।

त्वरित सुझाव: परिभाषा लिखते समय संबंधित क्षेत्र की खास पहचान स्पष्ट करें और एक उपयुक्त उदाहरण से अर्थ समझाएँ।

5(ङ). अंशकालिक पत्रकार किसे कहते हैं? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न पत्रकारिता की मूल अवधारणा और उसकी पहचान का संक्षिप्त स्पष्टीकरण माँगता है।
- उत्तर में परिभाषा के साथ उसका निर्णायक लक्षण स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: मूल आशय जो पत्रकार किसी समाचार-संस्था के लिए पूर्णकालिक नियुक्ति के स्थान पर सीमित समय या आवश्यकता के अनुसार समाचार-संग्रह और रिपोर्टिंग करता है, उसे अंशकालिक पत्रकार कहते हैं।

चरण 2: स्पष्टीकरण वह किसी निश्चित स्थान या क्षेत्र से समाचार भेज सकता है और अन्य काम भी कर सकता है। अनेक संस्थाएँ ऐसे संवाददाता को स्ट्रिंगर कहती हैं; पारिश्रमिक संस्था की व्यवस्था के अनुसार होता है।

चरण 3: निष्कर्ष अंशकालिक पत्रकार संस्था के लिए सीमित समय या आवश्यकतानुसार काम करने वाला संवाददाता है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा लिखते समय संबंधित क्षेत्र की खास पहचान स्पष्ट करें और एक उपयुक्त उदाहरण से अर्थ समझाएँ।

6. 'महानगरों में आवास की समस्या' विषय पर लगभग 150 शब्दों में फ़ीचर लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर किसी सामाजिक विषय को मानवीय अनुभव, सजीव वर्णन और सहज भाषा के सहारे प्रस्तुत करता है। इसमें विषय की जानकारी के साथ पाठक की संवेदना को जगाना भी आवश्यक है।
- प्रभावी शीर्षक, आकर्षक आरंभ, समस्या का विस्तार और विचारोत्तेजक अंत इस विषय की प्रस्तुति को क्रम देते हैं। लगभग 150 शब्दों की सीमा में कारण, प्रभाव और समाधान समेटे जाने चाहिए।

चरण 1: रूप और प्रस्तुति तय करना शीर्षक आवास के संकट को मानवीय रूप दे। शुरुआत महानगर की किसी परिचित स्थिति से हो, जैसे काम से लौटते व्यक्ति की लंबी यात्रा। आगे ऊँचे किराए, भीड़ और बुनियादी सुविधाओं की कमी को जोड़ें। फ़ीचर में केवल सूचनाओं की सूची न देकर घर की आवश्यकता और व्यक्ति के संघर्ष को उभारें। किसी काल्पनिक सर्वेक्षण या अप्रमाणित आँकड़े को तथ्य की तरह न रखें।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना बनाना रोज़गार और शिक्षा के आकर्षण से बढ़ती आबादी, सीमित स्थान और महँगी ज़मीन समस्या के प्रमुख कारण हैं। इसका असर कम आय वाले परिवारों, श्रमिकों और विद्यार्थियों पर दिखाया जा सकता है। अंत में सस्ते आवास, सुव्यवस्थित परिवहन और छोटे नगरों में अवसर बढ़ाने जैसे व्यावहारिक उपाय जोड़कर आशावादी दृष्टि रखें।

चरण 3: पूर्ण नमूना फ़ीचर **ऊँची इमारतों के नीचे घर का सपना**

लेखक: एक विद्यार्थी

शाम ढल चुकी है। चमचमाती इमारतों के पास से गुज़रता मज़दूर अपने तंग किराए के कमरे की ओर लौट रहा है। जिन मकानों को बनाने में उसके हाथ लगे, उनमें रहने का सपना भी उसके लिए महँगा है। यही महानगर की विडंबना है।

रोज़गार और बेहतर शिक्षा की तलाश में लोग शहर आते हैं, पर यहाँ घर जुटाना कठिन होता जाता है। ज़मीन की बढ़ती कीमतें और ऊँचे किराए आम परिवार की कमाई का बड़ा हिस्सा निगल लेते हैं। कोई दूर उपनगर से घंटों यात्रा करता है, तो कोई छोटी झुग्गी में पानी, सफ़ाई और सुरक्षा के अभाव से जूझता है। बच्चों के खेलने और पढ़ने की जगह भी सिमट जाती है।

समाधान केवल नई इमारतें खड़ी करना नहीं है। सस्ते किराए के सुरक्षित आवास, बेहतर सार्वजनिक परिवहन और छोटे नगरों में रोज़गार आवश्यक हैं। शहर की असली सफलता तब होगी, जब उसे सँवारने वाले हर व्यक्ति को सम्मानजनक घर मिलेगा।

चरण 4: निष्कर्ष प्रस्तुत फ़ीचर सजीव आरंभ से आवास की समस्या सामने लाता है, उसके मानवीय प्रभाव स्पष्ट करता है और व्यावहारिक उपायों के साथ समाप्त होता है।

त्वरित सुझाव: फ़ीचर का आरंभ दृश्य से करें और उसी मानवीय चिंता को अंतिम वाक्य में समाधान से जोड़ें।

7(i). 'गाँव से मज़दूरों का पलायन' विषय पर लगभग 150 शब्दों में आलेख लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख किसी सामाजिक विषय पर क्रमबद्ध, तार्किक और विचारपूर्ण लेखन है। इसमें समस्या के कारण, प्रभाव और समाधान स्पष्ट रूप से सामने आते हैं। भाषा सहज हो और विचार विषय से जुड़े रहें।
- शीर्षक तथा लेखक के नाम के बाद भूमिका, विषय का विवेचन और निष्कर्ष प्रस्तुत किए जाते हैं। लगभग 150 शब्दों में संतुलित दृष्टि रखना आवश्यक है; हर प्रकार के पलायन को एक जैसा मानना उचित नहीं है।

चरण 1: प्रारूप और केंद्रीय विचार तय करना शीर्षक गाँव से मज़दूरों के पलायन की समस्या पर केंद्रित रखें। भूमिका में आजीविका के लिए गाँव छोड़ने की विवशता बताएँ। इसके बाद कृषि पर निर्भरता, अनियमित काम और सुविधाओं की कमी जैसे कारणों को व्यवस्थित करें। आलेख की भाषा विचारप्रधान होगी; इसे निजी पत्र, संवाद अथवा समाचार का रूप नहीं देना है।

चरण 2: तर्क और समाधान का क्रम बनाना पहले पलायन के आर्थिक कारण रखें, फिर परिवार और गाँव पर प्रभाव बताएँ। शहर में काम मिलना एक अवसर है, पर असुरक्षित रोज़गार और महँगा जीवन नई कठिनाइयाँ पैदा कर सकते हैं। समाधान में ग्रामीण रोज़गार, सिंचाई, कुटीर उद्योग और शिक्षा-स्वास्थ्य की सुविधाएँ शामिल करें। बिना प्रमाण के आँकड़े देने से बचें और निष्कर्ष में सम्मानजनक विकल्पों की आवश्यकता उभारें।

चरण 3: पूर्ण नमूना आलेख **गाँव से मज़दूरों का पलायन**

लेखक: एक विद्यार्थी

गाँव छोड़कर शहर जाना अनेक मज़दूरों की पसंद से अधिक आजीविका की मजबूरी है। खेती में वर्षभर काम न मिलना, छोटी जोत, सिंचाई की कमी और स्थानीय उद्योगों का अभाव उन्हें बाहर जाने के लिए प्रेरित करते हैं। बच्चों की अच्छी शिक्षा और बेहतर इलाज की आशा भी इस प्रवृत्ति को बढ़ाती है।

शहरों में काम मिलने से परिवार की आय बढ़ सकती है, किंतु अनिश्चित रोज़गार, महँगा किराया और असुरक्षित परिस्थितियाँ मज़दूरों को परेशान करती हैं। परिवार से दूरी भावनात्मक कठिनाइयाँ बढ़ाती है। उधर गाँव में बुज़ुर्गों, महिलाओं और बच्चों पर अतिरिक्त ज़िम्मेदारियाँ आ जाती हैं।

इस समस्या का समाधान मज़दूरों की आवाजाही रोकना नहीं, गाँवों में सम्मानजनक अवसर उपलब्ध कराना है। कृषि के साथ खाद्य प्रसंस्करण, हस्तशिल्प और छोटे उद्योग विकसित किए जाएँ। समय पर मज़दूरी, कौशल प्रशिक्षण, अच्छी सड़कें तथा शिक्षा-स्वास्थ्य सुविधाएँ सुनिश्चित हों। जब गाँव में सुरक्षित जीवन और नियमित काम मिलेगा, तभी पलायन विवशता के बजाय स्वतंत्र चुनाव बन सकेगा।

चरण 4: निष्कर्ष आलेख पलायन के कारणों और प्रभावों का संतुलित विवेचन करता है तथा ग्रामीण अवसर बढ़ाकर विवश पलायन कम करने का सुझाव देता है।

त्वरित सुझाव: आलेख में कारण से प्रभाव और फिर समाधान की ओर बढ़ें; अंतिम अनुच्छेद को ठोस उपायों पर केंद्रित रखें।

7(ii). हाल ही में पढ़ी यात्रा-वृत्तांतों की किसी पुस्तक की संतुलित समीक्षा लगभग 150 शब्दों में लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संतुलित समीक्षा में पुस्तक और लेखक के परिचय के साथ विषय, शैली, विशेषताओं तथा सीमाओं का मूल्यांकन किया जाता है।
- यात्रा-वृत्तांत की समीक्षा में स्थानों के वर्णन के साथ वहाँ के समाज, संस्कृति और लेखक के अनुभवों पर ध्यान दिया जाता है।

चरण 1: समीक्षा का प्रारूप शीर्षक देकर पुस्तक और लेखक का नाम लिखें। इसके बाद विषयवस्तु और भाषा-शैली का परिचय दें। केवल प्रशंसा न करके पुस्तक की विशेषता तथा सीमा दोनों बताएँ और अंत में पाठकीय उपयोगिता पर निर्णय दें।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना राहुल सांकृत्यायन की यात्रा-वृत्तांत पुस्तक 'मेरी तिब्बत यात्रा' को आधार बनाया गया है। यात्रा के साहस, तिब्बती जनजीवन, सांस्कृतिक जिज्ञासा और वर्णन की प्रामाणिकता को प्रमुख रखें। अपरिचित विवरणों से सामान्य पाठक को होने वाली कठिनाई भी बताएँ।

चरण 3: लगभग 150 शब्दों में आदर्श समीक्षा **तिब्बत की संस्कृति से साक्षात्कार**

हाल ही में मैंने राहुल सांकृत्यायन की पुस्तक 'मेरी तिब्बत यात्रा' पढ़ी। यह यात्रा-वृत्तांत तिब्बत के भूगोल, जनजीवन और संस्कृति से परिचित कराता है। लेखक की साहसिक वृत्ति तथा ज्ञान प्राप्त करने की उत्कट इच्छा इसे विशेष बनाती है। दुर्गम रास्तों की कठिनाइयाँ पाठक को यात्रा के रोमांच से जोड़ती हैं।

पुस्तक में स्थानीय लोगों, उनके रहन-सहन और बौद्ध संस्कृति का वर्णन केवल दर्शक की दृष्टि से नहीं, बल्कि जिज्ञासु अध्येता की दृष्टि से हुआ है। लेखक के प्रत्यक्ष अनुभव विवरणों को विश्वसनीय बनाते हैं। भाषा प्रायः सहज, सजीव और वर्णनात्मक है। अनेक प्रसंगों में पाठक स्वयं को यात्री के साथ अनुभव करता है।

फिर भी अपरिचित स्थानों और सांस्कृतिक संदर्भों के विस्तृत विवरण कहीं-कहीं सामान्य पाठक से अधिक एकाग्रता माँगते हैं। कुछ अंशों का आस्वाद लेने के लिए अतिरिक्त जानकारी उपयोगी होगी। कुल मिलाकर यह पुस्तक मनोरंजन के साथ ज्ञान देती है और यात्राओं को मनुष्य तथा संस्कृति को समझने का माध्यम बनाती है।

चरण 4: निष्कर्ष इस समीक्षा में पुस्तक की विषयवस्तु और शैली की विशेषताओं के साथ उसकी पठनीयता की सीमा भी बताई गई है; इसलिए मूल्यांकन संतुलित है।

त्वरित सुझाव: समीक्षा में कथासार भर न लिखें; पुस्तक की एक विशेषता, एक सीमा और उपयोगिता पर अपना स्पष्ट निर्णय अवश्य दें।

8(क). बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे –
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है।
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!
मुझसे मिलने को कौन विकल?
मैं होऊँ किसके हित चंचल?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विह्वलता है
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।
प्रश्न (क): किसके बच्चों की बात की गई है, वे नीड़ों से क्यों झाँक रहे हैं? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'बच्चे' से आशय चिड़ियों के बच्चों से है; 'नीड़' उनका घोंसला है।
- 'प्रत्याशा' और 'झाँक रहे होंगे' लौटती माँ की प्रतीक्षा तथा बच्चों की उत्सुकता व्यक्त करते हैं।

चरण 1: बच्चों की पहचान यहाँ चिड़ियों के बच्चों की बात की गई है। 'नीड़ों' और 'चिड़ियों' शब्दों का साथ आना स्पष्ट करता है कि कवि घोंसलों में बैठे नन्हे पक्षियों का चित्र उपस्थित करता है।

चरण 2: नीड़ों से झाँकने का कारण संध्या होने लगी है और बच्चे अपनी माँ के लौटने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। वे उसके आने की आशा में बार-बार घोंसलों से बाहर झाँकते हैं। दिन ढलने पर घर लौटने का समय निकट है। माँ से मिलने की उत्सुकता और उसके स्नेह की चाह इस प्रतीक्षा का मूल भाव है। इन्हीं प्रतीक्षारत बच्चों का ध्यान चिड़ियों की उड़ान में चंचलता भर देता है।

चरण 3: निष्कर्ष चिड़ियों के बच्चे अपनी माँ की वापसी की उत्सुक प्रतीक्षा में नीड़ों से झाँक रहे हैं। संध्या का समय उनकी प्रतीक्षा को और तीव्र करता है।

त्वरित सुझाव: 'किसके' के उत्तर में चिड़ियों के बच्चे लिखें और 'क्यों' के उत्तर को माँ की वापसी की प्रतीक्षा से जोड़ें।

8(ख). बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे –
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है।
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!
मुझसे मिलने को कौन विकल?
मैं होऊँ किसके हित चंचल?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विह्वलता है
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।
प्रश्न (ख): चिड़ियों की उड़ान में गति आने और कवि के शिथिल क़दमों के क्या कारण हो सकते हैं? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रियजनों की प्रतीक्षा का बोध उत्साह देता है और लक्ष्य की ओर गति बढ़ाता है।
- अकेलेपन का अनुभव कवि के उत्साह को शिथिल करता है; यही चिड़ियों तथा कवि की मन:स्थितियों का अंतर है।

चरण 1: चिड़ियों की उड़ान में गति चिड़ियों को ध्यान आता है कि उनके बच्चे घोंसलों में उनकी राह देख रहे होंगे। संध्या होने पर बच्चों से शीघ्र मिलने की इच्छा उनके परों में चंचलता भरती है। बच्चों का स्नेह और उनके पास लौटने का उद्देश्य उड़ान को तेज कर देता है।

चरण 2: कवि के कदमों में शिथिलता इसके विपरीत कवि सोचता है कि उससे मिलने के लिए कौन व्याकुल होगा और वह किसके लिए जल्दी करे। उसे किसी प्रतीक्षारत प्रियजन का आश्वासन नहीं मिलता। इस अकेलेपन और अभाव-बोध से उसका मन व्याकुल हो जाता है तथा कदम धीमे पड़ जाते हैं। यहाँ शिथिलता का कारण भावनात्मक निराशा है।

चरण 3: निष्कर्ष चिड़ियों को बच्चों की प्रतीक्षा का विश्वास गति देता है, जबकि कवि को अपने लिए किसी की प्रतीक्षा का अनुभव नहीं होता; इसी कारण उसके कदम शिथिल हो जाते हैं।

त्वरित सुझाव: दोनों कारण साथ लिखें: चिड़ियों के लिए प्रतीक्षारत बच्चे और कवि के लिए प्रतीक्षा करने वाले प्रियजन का अभाव।

8(ग). बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे –
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है।
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!
मुझसे मिलने को कौन विकल?
मैं होऊँ किसके हित चंचल?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विह्वलता है
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।
प्रश्न (ग): कवि अपने आप से क्या प्रश्न करता है? क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि के आत्मप्रश्न अकेलेपन और आत्मीय संबंध के अभाव की अनुभूति व्यक्त करते हैं।
- प्रश्नों का संदर्भ चिड़ियों की घर लौटने की उत्सुकता और कवि की निरुत्साहपूर्ण दशा का अंतर है।

चरण 1: कवि के आत्मप्रश्न कवि अपने आप से पूछता है—'मुझसे मिलने को कौन विकल?' और 'मैं होऊँ किसके हित चंचल?' अर्थात उससे मिलने के लिए कौन व्याकुल है और वह किसके लिए जल्दी-जल्दी चलकर लौटे। प्रश्नों में अपने जीवन के आत्मीय आधार को खोजने की व्याकुलता है।

चरण 2: प्रश्न करने का कारण चिड़ियाँ अपने बच्चों से मिलने के लिए उत्सुक होकर तेजी से लौट रही हैं। उन्हें देखकर कवि को लगता है कि उसकी राह देखने वाला कोई आत्मीय नहीं है। यही अकेलापन उसे स्वयं से प्रश्न करने को प्रेरित करता है। प्रतीक्षा करने वाले प्रियजन के अभाव का विचार उसके कदमों को शिथिल और हृदय को विह्वल बना देता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि पूछता है कि उससे मिलने को कौन व्याकुल है और वह किसके लिए शीघ्र लौटे। चिड़ियों की उत्सुकता के सामने अपना अकेलापन अनुभव करने के कारण वह ये प्रश्न करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में कविता के दोनों प्रश्न दें, फिर उनका कारण चिड़ियों की उत्सुकता से उभरे कवि के अकेलेपन से समझाएँ।

8(घ). बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे –
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है।
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!
मुझसे मिलने को कौन विकल?
मैं होऊँ किसके हित चंचल?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विह्वलता है
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।
प्रश्न (घ): 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' – कथन की आवृत्ति क्या संकेत करती है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य में आवृत्ति किसी भाव या अनुभव को बार-बार उभारकर उसका प्रभाव गहरा करती है।
- दिन ढलने का बिंब समय के निरंतर बीतने और मिलन की उत्कंठा अथवा अकेलेपन की अनुभूति से जुड़ा है।

चरण 1: चिड़ियों की स्थिति से अर्थ समझें दिन ढलने के साथ चिड़ियों को अपने नीड़ों में प्रतीक्षा करते बच्चों का ध्यान आता है। इसलिए उनमें जल्दी लौटने की चंचलता भर जाती है। इस प्रसंग में उक्त पंक्ति की आवृत्ति समय कम होने तथा प्रियजनों तक शीघ्र पहुँचने की व्यग्रता को तीव्र करती है।

चरण 2: कवि के मन का विरोधी भाव पहचानें कवि सोचता है कि उससे मिलने के लिए कोई विकल नहीं है। यही विचार उसके कदम शिथिल करता है और हृदय में विह्वलता भर देता है। बार-बार दिन ढलने का उल्लेख जीवन और समय की क्षणभंगुरता का बोध कराते हुए उसके अकेलेपन तथा मानसिक व्याकुलता को और गहरा करता है।

चरण 3: निष्कर्ष इस कथन की आवृत्ति समय के तेजी से बीतने का संकेत देती है। इससे चिड़ियों की मिलनोत्कंठा और कवि की अकेलेपन से उत्पन्न विह्वलता दोनों अधिक मार्मिक बनते हैं।

त्वरित सुझाव: आवृत्ति का अर्थ बताते समय चिड़ियों की गति और कवि की शिथिलता, दोनों से उसका संबंध जोड़ें।

अथवा

8(क). छोटा मेरा खेत चौकोना
काग़ज़ का एक पन्ना
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।
कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया नि:शेष
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।
(अथवा) प्रश्न (क): छोटे खेत और काग़ज़ का रूपक समझाइए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रूपक में उपमेय पर उपमान का सीधा आरोप होता है; दोनों को एक मानकर अर्थ व्यक्त किया जाता है।
- इस अंश में काव्य-रचना को खेती और काग़ज़ के पन्ने को खेत के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

चरण 1: पन्ने और खेत की समानता समझें कवि ने काग़ज़ के चौकोर पन्ने को अपना छोटा खेत कहा है। जैसे खेत में बीज बोने पर फसल उत्पन्न होती है, वैसे ही काग़ज़ पर किसी अनुभूति या विचार से कविता का सृजन होता है। इस प्रकार छोटा खेत काव्य-रचना की भूमि अर्थात काग़ज़ के पन्ने का रूपक है।

चरण 2: समूचे रूपक का विस्तार पहचानें अंश में क्षण की अनुभूति बीज है, कल्पना उसे पोषित करने वाला रसायन है और उससे फूटने वाले शब्द अंकुर हैं। आगे पल्लव-पुष्प रचना के विकसित सौंदर्य को व्यक्त करते हैं। इन संबद्ध बिंबों के कारण काग़ज़ और खेत का संबंध केवल आकार तक सीमित नहीं रहता, बल्कि सृजन की पूरी प्रक्रिया को स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष काग़ज़ के पन्ने में खेत का आरोप किया गया है। उस पर अनुभूति का बीज कल्पना से विकसित होकर शब्दों और सुंदर कविता की फसल बनता है; यही इस रूपक का आशय है।

त्वरित सुझाव: रूपक समझाते हुए केवल चौकोर आकार न लिखें; पन्ने पर कविता और खेत में फसल के सृजन का संबंध भी दें।

8(ख). छोटा मेरा खेत चौकोना
काग़ज़ का एक पन्ना
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।
कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया नि:शेष
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।
(अथवा) प्रश्न (ख): रचना के संदर्भ में 'अंधड़' और 'बीज' से आप क्या समझते हैं? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि खेती के बिंबों द्वारा रचना के जन्म और विकास को व्यक्त करता है।

- किसी भावावेग से उत्पन्न क्षणिक अनुभूति कल्पना में विकसित होकर शब्दों का रूप लेती है।

चरण 1: अंधड़ का प्रतीकात्मक अर्थ स्पष्ट करें अंधड़ का अर्थ यहाँ बाहरी तूफान मात्र नहीं है। वह कवि के भीतर अचानक उठने वाला भावावेग या प्रेरणा है, जो उसकी संवेदना को झकझोरकर रचना के लिए उन्मुख करता है। जैसे अंधड़ आकस्मिक रूप से आता है, वैसे ही काव्य-सृजन की प्रेरणा भी किसी अनुभव से सहसा जाग सकती है।

चरण 2: बीज को रचना के मूल से जोड़ें बीज उस क्षण की अनुभूति, विचार या संवेदना का प्रतीक है जो कविता के जन्म का मूल बनती है। कल्पना के संपर्क में यह अनुभूति अपना प्रारंभिक रूप खोकर शब्दों में विकसित होती है। जैसे बीज से पौधा निकलता है, वैसे ही इस छोटी-सी मूल अनुभूति से पूरी रचना आकार ग्रहण करती है।

चरण 3: निष्कर्ष रचना के संदर्भ में अंधड़ आकस्मिक भावावेग या सृजन-प्रेरणा है और बीज उस प्रेरणा से जन्मी क्षणिक अनुभूति अथवा विचार है, जिससे कविता विकसित होती है।

त्वरित सुझाव: अंधड़ को प्रेरक भावावेग और बीज को मूल अनुभूति बताकर दोनों के अलग-अलग कार्य स्पष्ट करें।

8(ग). छोटा मेरा खेत चौकोना
काग़ज़ का एक पन्ना
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।
कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया नि:शेष
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।
(अथवा) प्रश्न (ग): कल्पना को रसायन क्यों कहा गया है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कल्पना अनुभूति को काव्यात्मक रूप देने वाली सृजनात्मक शक्ति है।
- खेती के रूपक में रसायन बीज के पोषण और विकास का माध्यम है; कल्पना रचना में यही भूमिका निभाती है।

चरण 1: रसायन के कार्य से तुलना करें जैसे रसायन बीज को पोषण देकर उसके अंकुरण और विकास में सहायता करते हैं, वैसे ही कल्पना कवि की मूल अनुभूति को विकसित करती है। अनुभव अपने साधारण रूप में कविता नहीं बनता; कल्पना उसे नए रूप, अर्थ और अभिव्यक्ति प्रदान करके रचना के योग्य बनाती है।

चरण 2: अंश में हुए रूपांतरण का अर्थ बताएँ पंक्ति में बीज का नि:शेष गलना बताता है कि मूल अनुभूति का अलग अस्तित्व समाप्त होकर वह रचना में समा जाती है। उसी से शब्दों के अंकुर और पल्लव-पुष्प विकसित होते हैं। कल्पना के कारण एक क्षण का अनुभव सुंदर और प्रभावशाली काव्य बन जाता है; इसलिए उसे रसायन कहा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष कल्पना को रसायन इसलिए कहा गया है कि वह अनुभूति रूपी बीज को पोषित और रूपांतरित करके शब्दों, भावों तथा सौंदर्य से युक्त कविता का निर्माण करती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पोषण के साथ रूपांतरण का उल्लेख करें: अनुभूति कल्पना द्वारा सुंदर शब्द-रचना बनती है।

8(घ). छोटा मेरा खेत चौकोना
काग़ज़ का एक पन्ना
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया।
कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया नि:शेष
शब्द के अंकुर फूटे,
पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।
(अथवा) प्रश्न (घ): 'पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष' – पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- खेती का रूपक कविता के क्रमिक विकास और उसकी पूर्णता को मूर्त रूप देता है।
- पल्लव-पुष्प विकसित रचना के सुंदर शब्दों, भावों और कलात्मक समृद्धि के प्रतीक हैं।

चरण 1: अंकुर से पल्लव-पुष्प तक का क्रम समझें मूल अनुभूति कल्पना से पोषित होकर शब्दों के अंकुर के रूप में प्रकट होती है। फिर ये शब्द विकसित होकर सुंदर भावों और अभिव्यक्तियों से भर जाते हैं। इस प्रकार पल्लव-पुष्प कविता में आए विस्तार, सौंदर्य तथा भाव-समृद्धि को व्यक्त करते हैं।

चरण 2: नमित होने के बिंब का भाव बताएँ जिस प्रकार पौधा पत्तियों और फूलों से भरकर उनके भार से झुक जाता है, उसी प्रकार कवि का काग़ज़ रूपी खेत सुंदर काव्य से भरकर समृद्ध हो उठता है। नमित होने का बिंब इस सृजन की प्रचुरता और पूर्णता को उभारता है। अब आरंभ की क्षणिक अनुभूति कल्पना और शब्दों द्वारा एक विकसित, आकर्षक रचना का रूप ले चुकी है।

चरण 3: निष्कर्ष इस पंक्ति का भाव है कि अनुभूति से जन्मी कविता सुंदर शब्दों और समृद्ध भावों से पूर्ण हो गई है। काग़ज़ रूपी खेत पल्लव-पुष्पों से लदे पौधे की तरह काव्य-सौंदर्य से भर उठा है।

त्वरित सुझाव: पल्लव-पुष्प और नमित, दोनों का अर्थ खोलें: पहला काव्य-सौंदर्य और दूसरा उसकी प्रचुरता व्यक्त करता है।

9(क). कवितावली से आपकी पाठ्य-पुस्तक में उद्धृत छंदों के आधार पर सोदाहरण स्पष्ट कीजिए कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमताओं की अच्छी समझ है। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवितावली के छंद आजीविका के संकट और भूख की व्यापकता का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करते हैं।
- उत्तर में अलग-अलग व्यवसायों की दशा तथा पेट की आग के उदाहरणों को सामाजिक विषमता से जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: आजीविका के साधनों का संकट तुलसीदास लिखते हैं, "खेती न किसान को, भिखारी को न भीख तथा "बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी। किसान खेती से, व्यापारी व्यापार से और सेवक नौकरी से वंचित हैं। भिक्षुक तक को भिक्षा नहीं मिलती। इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि कवि ने समाज के विभिन्न वर्गों की आर्थिक कठिनाइयों को पहचाना है। सामान्य जनता के पास जीवन-निर्वाह का कोई सुनिश्चित साधन नहीं है; इसलिए वह चिंतित होकर पूछती है कि कहाँ जाए और क्या करे।

चरण 2: भूख और सामाजिक विवशता "किसबी, किसान-कुल, बनिक, भिखारी, भाट जैसे अनेक वर्गों का उल्लेख बताता है कि पेट भरने की चिंता पूरे समाज पर छाई हुई है। लोग इसी विवशता में ऊँचे-नीचे कर्म करते हैं और यहाँ तक कि "बेचत बेटा-बेटकी की स्थिति आती है। "पेट कीं आगि को बड़वाग्नि से भी बड़ा कहकर कवि भूख की विनाशकारी शक्ति बताते हैं। यह चित्रण केवल व्यक्तिगत दुख नहीं, आर्थिक व्यवस्था में व्याप्त अभाव और विषमता की समझ प्रकट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष तुलसीदास के छंद बेरोजगारी, आजीविका के अभाव और भूख से उत्पन्न विवशताओं का ठोस चित्र देते हैं; इसलिए वे अपने युग की आर्थिक विषमताओं के सजग कवि हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में किसान, व्यापारी और सेवक की दशा के साथ पेट की आग वाला उदाहरण अवश्य जोड़ें।

9(ख). 'कविता के बहाने' कविता में कविता और बच्चे को समानांतर रखने के क्या कारण हो सकते हैं? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण की कविता में बालमन की कल्पना और कविता की सर्जनात्मक स्वतंत्रता के बीच समानता है।
- घर की सीमाएँ पार करना संकीर्ण भेदों से मुक्त होने का प्रतीक है।

चरण 1: कल्पना और खेल की स्वतंत्रता बच्चे खेलते समय अपनी कल्पना से नया संसार बना लेते हैं। उनका आनंद किसी निश्चित उपयोग या लाभ पर निर्भर नहीं होता। कविता भी शब्दों का ऐसा सृजनात्मक खेल है जिसमें कवि नए अनुभव, संबंध और अर्थ रचता है। इसीलिए कवि कविता को "बच्चों के बहाने एक खेल मानते हैं। उनका रचनात्मक संसार मनुष्य को परिचित वस्तुओं में भी नए अर्थ देखने की दृष्टि देता है। दोनों में सहजता, उत्साह, निष्कपटता और नई संभावनाएँ खोजने की शक्ति है; वे बने-बनाए नियमों में पूरी तरह बँधे नहीं रहते।

चरण 2: सीमाओं और भेदभाव से मुक्ति बच्चों का खेल अपने-पराए घरों की सीमाएँ मिटा देता है; वे साथ खेलते हुए जाति, वर्ग, धर्म जैसे भेदों को महत्त्व नहीं देते। कविता भी मनुष्य को संकीर्ण सीमाओं से निकालकर व्यापक मानवीय अनुभव से जोड़ती है। "सब घर एक कर देने का भाव इसी एकात्मता को व्यक्त करता है। जैसे बालमन की कल्पना की उड़ान का अंत नहीं, वैसे ही कविता की अर्थ-व्याप्ति भी किसी एक स्थान, समय या निश्चित अर्थ तक सीमित नहीं रहती।

चरण 3: निष्कर्ष कविता और बच्चे अपनी कल्पनाशीलता, सहज खेलभावना, असीम संभावनाओं और भेद मिटाकर सबको जोड़ने की क्षमता के कारण समानांतर रखे गए हैं।

त्वरित सुझाव: बच्चों के खेल को केवल मनोरंजन न कहें; उसे कल्पना की स्वतंत्रता और घरों के भेद मिटने से जोड़ें।

9(ग). बादलों के आगमन से प्रकृति में होने वाले किन-किन परिवर्तनों को 'बादल राग' कविता रेखांकित करती है? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निराला की कविता में बादल का आगमन प्रकृति में हलचल, वर्षा और नवजीवन का संचार करता है।
- प्राकृतिक चित्रों में विनाश और सृजन का द्वंद्व तथा छोटे पौधों का उल्लास विशेष महत्त्व रखते हैं।

चरण 1: आकाश और धरती में हलचल बादलों के आने से शांत वातावरण में तेज हलचल उत्पन्न होती है। उनकी बार-बार होने वाली गर्जना और वर्षाधारा धरती को उद्वेलित करती है। बिजली की चमक और वज्रपात से ऊँचे पर्वत-शिखरों तक के टूटने का भीषण चित्र उभरता है। इस प्रकार आकाश का गंभीर स्वरूप, प्रचंड ध्वनि और धरती पर पड़ने वाला प्रभाव प्रकृति के उग्र रूप को सामने लाते हैं। बादल केवल दृश्य-सौंदर्य की वस्तु नहीं, परिवर्तन की सक्रिय शक्ति हैं।

चरण 2: वनस्पतियों में उल्लास और नवजीवन सूखी धरती को वर्षा से ताजगी मिलती है। वर्षा से छोटे-छोटे पौधे प्रसन्न होकर लहलहाने लगते हैं। वे मानो हाथ हिलाकर बादलों को बुलाते हैं। धरती के गर्भ में सोए अंकुर जल पाकर नया जीवन प्राप्त करने के लिए आतुर हो उठते हैं। ऊँचे और बड़े स्वरूप जहाँ बादलों की प्रचंडता से प्रभावित होते हैं, वहीं छोटे पौधों को उनके आगमन से पोषण और आशा मिलती है। प्रकृति में यह परिवर्तन विनाश के साथ सृजन तथा नई वृद्धि की संभावना भी उद्घाटित करता है।

चरण 3: निष्कर्ष बादलों का आगमन गर्जन, वर्षा, बिजली और वज्रपात से प्रकृति को आंदोलित करता है तथा अंकुरों और छोटे पौधों में

नवजीवन और उल्लास भर देता है।

त्वरित सुझाव: बादलों के उग्र रूप के साथ छोटे पौधों और अंकुरों पर पड़ने वाला जीवनदायी प्रभाव भी लिखें।

10(क). आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी
हाथों पे झुलाती है उसे गोद-भरी
रह-रह के हवा में जो लोका देती है
गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी।
प्रश्न (क): काव्यांश की भाषा पर टिप्पणी कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़िराक़ की रुबाई की भाषा सहज हिंदुस्तानी है, जिसमें बोलचाल की आत्मीयता है।
- शब्द-चयन मातृत्व के घरेलू दृश्य को सजीव और श्रव्य बनाता है।

चरण 1: भाषा का स्वरूप काव्यांश की भाषा सरल, सहज और बोलचाल के निकट है। उसमें हिंदी-उर्दू की मिली-जुली हिंदुस्तानी का आत्मीय रूप मिलता है। "आँगन, "गोद, "हाथों और "बच्चे जैसे परिचित शब्द घरेलू परिवेश को स्वाभाविक बनाते हैं। "लोका देती है जैसा लोकप्रचलित प्रयोग माँ द्वारा शिशु को हवा में उछालने की क्रिया को बहुत सहज ढंग से व्यक्त करता है।

चरण 2: अभिव्यक्ति की विशेषता भाषा चित्रात्मक और संगीतात्मक है। "चाँद के टुकड़े से सुंदर शिशु का आकर्षक बिंब उभरता है, जबकि "खिलखिलाते और "गूँज से बच्चे की हँसी सुनाई देने लगती है। "रह-रह की आवृत्ति क्रिया की पुनरावृत्ति और लय को व्यक्त करती है। इस प्रकार कम शब्दों में माँ-बच्चे का आत्मीय दृश्य सजीव हो उठता है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश की सहज हिंदुस्तानी, लोकप्रचलित शब्दावली, लय और चित्रात्मकता वात्सल्य के दृश्य को प्रभावपूर्ण बनाती हैं।

त्वरित सुझाव: भाषा की विशेषता बताते समय लोका देती है और खिलखिलाते जैसे ठोस शब्दों का उदाहरण दें।

10(ख). आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी
हाथों पे झुलाती है उसे गोद-भरी
रह-रह के हवा में जो लोका देती है
गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी।
प्रश्न (ख): काव्यांश का भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश का केंद्रीय भाव माँ और शिशु के बीच सहज स्नेह है।
- शिशु की प्रसन्नता में माँ का आनंद और घरेलू जीवन का सौंदर्य प्रकट होता है।

चरण 1: माँ की स्नेहमयी क्रियाएँ आँगन में खड़ी माँ अपने सुंदर शिशु को गोद में लेकर हाथों पर झुला रही है। बच्चे को "चाँद का टुकड़ा कहना उसके प्रति माँ के अगाध स्नेह और उसकी सुंदरता को प्रकट करता है। माँ उसे बार-बार हवा में उछालकर बहलाती है। उसकी इन सहज क्रियाओं में शिशु को आनंद देने की इच्छा और मातृत्व की आत्मीयता दिखाई देती है।

चरण 2: शिशु का आनंद और वात्सल्य माँ के उछालने पर बच्चा खिलखिलाकर हँस पड़ता है और उसकी हँसी से आँगन गूँज उठता है।

यह हँसी बच्चे की निष्कपट प्रसन्नता और माँ के प्रति उसके सहज विश्वास का बोध कराती है। माँ और बच्चे का आनंद एक-दूसरे से जुड़ा है। कवि ने किसी असाधारण घटना के स्थान पर रोजमर्रा के घरेलू क्षण में छिपे वात्सल्य, अपनत्व और जीवन की मधुरता का सुंदर चित्र प्रस्तुत किया है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश का भाव-सौंदर्य माँ के स्नेह और बच्चे की निष्कपट हँसी से बने वात्सल्यमय, आनंदपूर्ण घरेलू दृश्य में निहित है।

त्वरित सुझाव: भाव-सौंदर्य में माँ की क्रिया और बच्चे की प्रतिक्रिया जोड़ें; केवल अलंकारों का नाम न लिखें।

10(ग). आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी
हाथों पे झुलाती है उसे गोद-भरी
रह-रह के हवा में जो लोका देती है
गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी।
प्रश्न (ग): प्रयुक्त आलंकारिक सौंदर्य पर टिप्पणी कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अलंकार की पहचान शब्दों की आवृत्ति और अर्थ में आरोपित समानता, दोनों के आधार पर की जाती है।
- इन पंक्तियों में बच्चे के सौंदर्य को चाँद के रूप में प्रस्तुत करके माँ के वात्सल्य को उभारा गया है।

चरण 1: रूपक अलंकार की पहचान 'चाँद के टुकड़े' में शिशु को चाँद का टुकड़ा ही कहा गया है। यहाँ बच्चे के उज्ज्वल, सुंदर और प्रिय रूप पर चाँद का आरोप है। उपमेय शिशु और उपमान चाँद के बीच 'सा' या 'जैसा' कहकर तुलना नहीं की गई, इसलिए यहाँ रूपक अलंकार है। यह अभिव्यक्ति माँ की दृष्टि में बच्चे की अनुपम सुंदरता भी दिखाती है।

चरण 2: शब्दगत सौंदर्य स्पष्ट करना 'रह-रह' में एक ही शब्द की पुनरावृत्ति होने से पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है। इससे माँ द्वारा बार-बार बच्चे को हवा में उछालने की क्रिया सजीव होती है। 'खिलखिलाते' शब्द हँसी की ध्वनि का आभास देता है और दृश्य में चंचलता लाता है। प्रमुख आलंकारिक सौंदर्य रूपक और पुनरुक्तिप्रकाश से निर्मित हुआ है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश में 'चाँद के टुकड़े' में रूपक तथा 'रह-रह' में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है। इनसे शिशु का सौंदर्य और माँ का वात्सल्य प्रभावपूर्ण बनते हैं।

त्वरित सुझाव: अलंकार का नाम लिखने के साथ संबंधित शब्द उद्धृत करें और बताएँ कि उससे कौन-सा भाव उभरता है।

11(क). बाज़ार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है। वह रूप का जादू है पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो और मन ख़ाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर ख़ूब होता है। जेब ख़ाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन ख़ाली है तो बाज़ार की अनेकानेक चीज़ों का निमंत्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं हुई उस वक्त जेब भरी, तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है! मालूम होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ। सभी सामान ज़रूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। पर यह सब जादू का असर है।
प्रश्न (क): 'बाज़ार में एक जादू है' कथन का क्या आशय है? यह जादू कैसे काम करता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में 'जादू' बाज़ार के रूप-सौंदर्य और वस्तुओं के आकर्षण का प्रतीक है।

- उत्तर में जादू का आशय और आँखों से मन तक पहुँचने की उसकी प्रक्रिया अलग-अलग स्पष्ट करनी चाहिए।

चरण 1: कथन का आशय 'बाज़ार में एक जादू है' का आशय है कि सजी-धजी दुकानों में प्रदर्शित वस्तुएँ मनुष्य को अपनी ओर खींचती हैं। उनकी चमक-दमक ऐसी मोहक होती है कि व्यक्ति वास्तविक आवश्यकता का विचार छोड़कर उन्हें पाने की इच्छा करने लगता है। लेखक इसी सम्मोहनकारी आकर्षण को जादू कहते हैं।

चरण 2: जादू के काम करने की प्रक्रिया यह जादू 'आँख की राह' काम करता है। वस्तुओं का सुंदर रूप पहले आँखों को लुभाता है, फिर मन में उन्हें खरीदने की लालसा जगाता है। मन खाली हो, अर्थात अपनी जरूरत का स्पष्ट बोध न हो, तो अनेक वस्तुएँ जरूरी तथा सुख-सुविधा बढ़ाने वाली लगती हैं। जेब में पैसा भी हो तो यह आकर्षण और प्रभावी होकर अनावश्यक खरीदारी कराता है।

चरण 3: निष्कर्ष बाज़ार का जादू उसकी दृश्य चमक-दमक का सम्मोहन है। वह आँखों के माध्यम से मन को लुभाकर वस्तुओं की अनावश्यक चाह पैदा करता है।

त्वरित सुझाव: 'आँख की राह' और 'रूप का जादू' को जोड़कर आकर्षण से खरीदने की इच्छा तक की प्रक्रिया लिखें।

11(ख). बाज़ार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है। वह रूप का जादू है पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो और मन ख़ाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर ख़ूब होता है। जेब ख़ाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन ख़ाली है तो बाज़ार की अनेकानेक चीज़ों का निमंत्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं हुई उस वक्त जेब भरी, तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है! मालूम होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ। सभी सामान ज़रूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। पर यह सब जादू का असर है।

प्रश्न (ख): इस जादू की मर्यादा क्या है? स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'मर्यादा' यहाँ नैतिक आचरण नहीं, बल्कि बाज़ार के आकर्षण की प्रभाव-सीमा का संकेत है।
- चुंबक और लोहे का उदाहरण बताता है कि किसी आकर्षण का प्रभाव हर व्यक्ति पर समान नहीं होता।

चरण 1: उदाहरण का अर्थ समझना लेखक कहते हैं कि चुंबक का जादू केवल लोहे पर चलता है। इसी प्रकार बाज़ार की चमक-दमक भी हर मनुष्य को समान रूप से प्रभावित नहीं करती। उसके प्रभाव के लिए व्यक्ति के मन में ग्रहणशीलता होनी चाहिए। यहाँ ग्रहणशीलता का अर्थ है अपनी आवश्यकता और संतोष का स्पष्ट बोध न होना।

चरण 2: मर्यादा स्पष्ट करना जिसका मन खाली है, वह बाजार की वस्तुओं से आसानी से लुभा जाता है; जेब भरी होने पर खरीदने की इच्छा और प्रबल हो जाती है। इसके विपरीत, जिसका मन अपनी वास्तविक जरूरत के ज्ञान तथा संतोष से भरा है, वह हर आकर्षक वस्तु को आवश्यक नहीं मानता। इसलिए बाजार का जादू ऐसे विवेकशील व्यक्ति पर प्रभाव नहीं जमा पाता। उसकी मर्यादा मन की इसी अवस्था से तय होती है।

चरण 3: निष्कर्ष बाज़ार के जादू की मर्यादा यह है कि वह खाली और असंतुष्ट मन को प्रभावित करता है; आवश्यकता के स्पष्ट बोध और संतोष से भरे मन पर उसका प्रभाव नहीं पड़ता।

त्वरित सुझाव: मर्यादा का अर्थ सीमा लें और चुंबक-लोहे के उदाहरण को खाली तथा संतुष्ट मन से जोड़ें।

11(ग). बाज़ार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है। वह रूप का जादू है पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो और मन ख़ाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर ख़ूब होता है। जेब ख़ाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन ख़ाली है तो बाज़ार की अनेकानेक चीज़ों का निमंत्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं हुई उस वक्त जेब भरी, तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है! मालूम होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ। सभी सामान ज़रूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। पर यह सब जादू का असर है।

प्रश्न (ग): मन ख़ाली होने का क्या अर्थ है? इसका परिणाम क्या होता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यहाँ मन का खाली होना धन का अभाव नहीं, आवश्यकता के निश्चित बोध और संतोष का अभाव है।
- गद्यांश में खाली मन और भरी जेब का मेल अनियंत्रित वस्तु-लालसा को जन्म देता है।

चरण 1: मन खाली होने का अर्थ मन खाली होने का अर्थ है कि व्यक्ति को अपनी वास्तविक जरूरत का स्पष्ट ज्ञान न हो और उसके भीतर संतोष न हो। वह पहले से तय नहीं कर पाता कि उसे क्या लेना है और क्या उसके लिए अनावश्यक है। इस मानसिक रिक्तता के कारण बाज़ार में दिखाई देने वाली अनेक चीज़ों का निमंत्रण उसके मन तक आसानी से पहुँच जाता है।

चरण 2: उसका परिणाम समझना ऐसा व्यक्ति वस्तुओं की चमक-दमक से मोहित होकर सोचने लगता है कि यह भी लूँ और वह भी लूँ। उसे सभी सामान जरूरी तथा आराम बढ़ाने वाले लगने लगते हैं। जेब भरी हो तो खरीदने की लालसा और बढ़ती है तथा विवेक कमजोर पड़ जाता है। फलतः वह आवश्यकता के अनुसार खरीदने के बजाय आकर्षण के प्रभाव में अनावश्यक वस्तुएँ भी लेने लगता है।

चरण 3: निष्कर्ष मन का खालीपन अपनी जरूरत के बोध और संतोष का अभाव है। इससे बाजार का आकर्षण हावी होता है और व्यक्ति हर वस्तु पाने की इच्छा में अनावश्यक खरीदारी करने लगता है।

त्वरित सुझाव: खाली मन को खाली जेब न समझें; उत्तर में मानसिक असंतोष और उससे उत्पन्न वस्तु-लालसा स्पष्ट करें।

11(घ). बाज़ार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है। वह रूप का जादू है पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो और मन ख़ाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर ख़ूब होता है। जेब ख़ाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन ख़ाली है तो बाज़ार की अनेकानेक चीज़ों का निमंत्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं हुई उस वक्त जेब भरी, तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है! मालूम होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ। सभी सामान ज़रूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। पर यह सब जादू का असर है।

प्रश्न (घ): मन पर जादू का असर कब और कैसे दिखाई देता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार का प्रभाव व्यक्ति की मनःस्थिति पर निर्भर है; खाली मन उसमें आसानी से उलझता है।
- प्रभाव का प्रमाण व्यक्ति की बदलती सोच है, जिसमें हर वस्तु आवश्यक और सुविधाजनक दिखाई देती है।

चरण 1: असर होने की स्थिति मन पर बाज़ार के जादू का असर तब होता है जब मन खाली हो, अर्थात व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं के प्रति स्पष्ट और संतुष्ट न हो। ऐसी अवस्था में बाज़ार की अनेक चीज़ें उसे आकर्षित करती हैं। यदि जेब में पैसा भी हो तो प्रभाव बहुत बढ़ जाता है, क्योंकि वह अपनी जागी हुई इच्छाओं को तुरंत खरीदारी में बदल सकता है।

चरण 2: असर के दिखाई देने का ढंग जादू का असर इस सोच से दिखाई देता है कि 'यह भी लूँ, वह भी लूँ'। व्यक्ति को सभी सामान जरूरी और आराम को बढ़ाने वाले लगते हैं। वह उपयोगिता तथा आवश्यकता की जाँच करने के बजाय वस्तुओं के रूप से सम्मोहित हो जाता है। इसी कारण मन किसी संयमकारी विचार को मानने को तैयार नहीं रहता और खरीदने की लालसा बढ़ती जाती है।

चरण 3: निष्कर्ष खाली मन और विशेषतः भरी जेब की स्थिति में जादू प्रभावी होता है। उसका असर हर वस्तु को जरूरी मानने और उसे खरीद लेने की बेचैन इच्छा में प्रकट होता है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के 'कब' के लिए मन-जेब की स्थिति और 'कैसे' के लिए 'यह भी लूँ, वह भी लूँ' वाली प्रतिक्रिया लिखें।

12(क). आपके विचार से चार्ली चैप्लिन की सर्व-स्वीकार्यता के क्या कारण हो सकते हैं? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चार्ली चैप्लिन की कला सामान्य मनुष्य के सुख-दुःख को केंद्र में रखती है। उनकी मूक अभिनय-शैली भाषा और देश की सीमाओं से आगे पहुँचती है।
- उनके हास्य में करुणा और सामाजिक विषमता की पहचान जुड़ी हुई है; इसलिए दर्शक हँसते हुए अपने जीवन को भी पहचानता है।

चरण 1: भाषा और संस्कृति की बाधा का मिटना चार्ली मुख्यतः हाव-भाव, शारीरिक मुद्राओं और परिस्थितियों से प्रभाव पैदा करते हैं। उनके अभिनय को समझने के लिए किसी विशेष भाषा का ज्ञान आवश्यक नहीं है। उनकी फिल्मों का गरीब, असहाय किंतु संघर्षशील साधारण आदमी अनेक देशों के दर्शकों को अपने जैसा लगता है। इसीलिए उनकी कला किसी एक वर्ग या राष्ट्र तक सीमित नहीं रहती।

चरण 2: हास्य और करुणा का मानवीय मेल वे मनुष्य की कमजोरियों, अभावों और असफलताओं को हँसी का विषय बनाते हैं, पर पीड़ित मनुष्य के प्रति संवेदना बनाए रखते हैं। उनके पात्र कठिन परिस्थितियों में भी जीवट और आत्मसम्मान नहीं छोड़ते। दर्शक उनकी ठोकरों पर हँसता है और उनके दुःख से जुड़ता भी है। बाहरी प्रतिष्ठा के पीछे छिपी मानवीय कमजोरी दिखाकर वे दर्शक को अपने ऊपर हँसना भी सिखाते हैं। उनका हास्य केवल मनोरंजन नहीं करता, बल्कि सत्ता, दिखावे और अन्याय की विसंगतियाँ भी खोलता है। इस कारण अलग-अलग आयु और सामाजिक पृष्ठभूमि के दर्शक उसमें अपने अनुभवों का अर्थ पा सकते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष चार्ली की सर्व-स्वीकार्यता का आधार उनकी भाषातीत अभिव्यक्ति, सामान्य मनुष्य से निकटता तथा हास्य, करुणा और संघर्षशीलता का सहज संयोग है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में भाषा की बाधा से मुक्ति और हास्य-करुणा के मेल को साधारण मनुष्य के जीवन से जोड़िए।

12(ख). 'नमक' कहानी की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रज़िया सज्जाद ज़हीर की कहानी में विभाजन से बनी राजनीतिक सीमाओं के बीच मनुष्य के आत्मीय संबंधों की निरंतरता प्रमुख है।
- नमक जन्मभूमि की स्मृति, अपनत्व और साझा सांस्कृतिक जीवन का प्रतीक बनता है।

चरण 1: विभाजन के पार जन्मभूमि का लगाव कहानी की मूल संवेदना यह है कि देश का बँटवारा लोगों के मन, स्मृतियों और स्नेह को नहीं बाँट सकता। भारत में रहने वाली सिख बीबी का लाहौर के नमक के प्रति लगाव किसी वस्तु का सामान्य आकर्षण नहीं है। उसमें छूटे हुए घर, अपने लोगों और जन्मभूमि के स्वाद की याद बसी हुई है। सफिया उस भावना को समझती है और नमक लाने का प्रयत्न करती है।

चरण 2: मनुष्यता का सीमाओं से बड़ा होना सीमा और कस्टम के नियम लोगों को अलग-अलग देशों का नागरिक बनाते हैं, किंतु कहानी में अधिकारियों की जन्मस्थान-संबंधी स्मृतियाँ भी उसी आत्मीयता को उजागर करती हैं। नमक के माध्यम से दोनों ओर के लोगों का साझा दुःख और अपनापन सामने आता है। कहानी संकीर्ण राष्ट्रीयता और संदेह के स्थान पर सहानुभूति, विश्वास और मानवीय संबंधों को महत्त्व देती है। दोनों देशों के साधारण लोग अपनी मिट्टी से एक जैसा प्रेम करते हैं। इस समान अनुभूति को पहचानना दूसरे देश के व्यक्ति को पराया समझने की प्रवृत्ति को तोड़ता है और कहानी को व्यापक मानवीय अर्थ देता है।

चरण 3: निष्कर्ष कहानी का संदेश है कि राजनीतिक विभाजन के बावजूद जन्मभूमि का प्रेम और मनुष्यों की आत्मीयता बनी रहती है; मानवीय संवेदना कृत्रिम सीमाओं से अधिक शक्तिशाली है।

त्वरित सुझाव: नमक को केवल खाने की वस्तु न बताकर सिख बीबी की जन्मभूमि और साझा स्मृतियों का प्रतीक बताइए।

12(ग). शिरीष और महात्मा गाँधी की तुलना किस आधार पर की गई है? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हज़ारीप्रसाद द्विवेदी शिरीष के स्वभाव में प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच सहजता, कोमलता और जीवन-रस बनाए रखने की शक्ति देखते हैं।
- महात्मा गाँधी से तुलना बाहरी रूप के आधार पर नहीं, भीषण संकट के बीच अविचल रहकर लोककल्याण करने के आधार पर है।

चरण 1: शिरीष की प्रतिकूलता में स्थिरता शिरीष भीषण गरमी, लू और तपन में भी कोमल फूलों से खिला रहता है। वातावरण की कठोरता उसे न तो जीवन से विमुख करती है, न उसकी सरसता समाप्त कर पाती है। लेखक उसके इस स्वभाव में अनासक्ति, मस्ती और कठिन परिस्थितियों से जीवन-रस खींच लेने की अद्भुत क्षमता देखते हैं। वह अपना संतुलन और सहज सौंदर्य बनाए रखता है।

चरण 2: गाँधी के आचरण से साम्य देश में हिंसा, घृणा और सांप्रदायिक द्वेष की आँधी चल रही थी, तब गाँधी प्रेम, अहिंसा और सद्भाव की साधना में लगे रहे। बाहरी संकट के दबाव में उन्होंने अपने मानवीय आदर्श नहीं छोड़े। जैसे शिरीष कठोर ताप के बीच कोमलता और प्रसन्नता बचाए रखता है, वैसे ही गाँधी अशांत वातावरण में करुणा और शांति का संदेश देते रहे। दोनों में अविचलता के साथ लोकमंगल का भाव है। इस तुलना में कठोर परिस्थितियों से पलायन की बात नहीं है। दोनों की विशेषता है कि वे विपरीत वातावरण के बीच रहकर भी उससे पराजित नहीं होते और अपनी मूल प्रकृति को सुरक्षित रखते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष और गाँधी की तुलना संकट में भी अनासक्त, अविचल और सरस बने रहने तथा कठोरता के बीच कोमल मानवीय मूल्यों को जीवित रखने के आधार पर की गई है।

त्वरित सुझाव: पहले शिरीष की लू में खिलने की विशेषता लिखिए, फिर उसे गाँधी के हिंसा के बीच अहिंसा-प्रयास से जोड़िए।

12(घ). 'काले मेघा पानी दे' के आधार पर जीजी की दृष्टि में त्याग और दान को परिभाषित कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- धर्मवीर भारती के संस्मरण में जीजी दान को केवल अतिरिक्त वस्तु देने की क्रिया नहीं मानतीं; उसके पीछे त्याग और लोकहित की भावना आवश्यक है।
- आवश्यक वस्तु को अपने से अलग कर दूसरों के हित में देना दान का सार है; कठिन समय में उसका महत्त्व और बढ़ जाता है।

चरण 1: त्याग के बिना दान अधूरा है जीजी की दृष्टि में जो वस्तु अपने पास बहुत अधिक हो और जिसकी अपने लिए आवश्यकता ही न हो, उसे दे देने में विशेष त्याग नहीं होता। सच्चा दान तब होता है जब मनुष्य अपने काम की, आवश्यक वस्तु में से कुछ दूसरों के लिए छोड़ता है। इस प्रकार त्याग अपने स्वार्थ और संग्रह के आग्रह को कम करना है, जबकि दान उसी भावना से किया गया अर्पण है।

चरण 2: पानी देने और बीज बोने का उदाहरण पानी के अभाव में भी इंदर सेना को पानी देना जीजी के लिए व्यर्थ खर्च नहीं, व्यापक हित के लिए किया गया अर्पण है। वे खेत में बीज डालने की बात से इसे समझाती हैं: किसान अच्छे बीज को बचाकर रखने के बजाय धरती को देता है, तभी आगे फसल मिलती है। इसी तरह अपने हिस्से से कुछ छोड़ना ही भविष्य की प्राप्ति और सामूहिक भलाई का आधार बनता है। यह जीजी की आस्था और दान-दृष्टि का तर्क है। अत: दान का मूल्य केवल उसकी मात्रा से नहीं, देने वाले की जरूरत, उसके त्याग और उसकी सद्भावना से तय होता है।

चरण 3: निष्कर्ष जीजी के अनुसार सच्चा दान आवश्यक वस्तु का त्याग करके होता है। अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर लोकहित में दिया गया अंश ही दान को अर्थपूर्ण बनाता है।

त्वरित सुझाव: दान की परिभाषा में आवश्यक वस्तु के त्याग को रखें और उसे किसान के बीज बोने वाले उदाहरण से स्पष्ट करें।

12(ङ). पहलवान की ढोलक की आवाज़ का पूरे गाँव पर क्या असर होता था? कैसे? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी में ढोलक की आवाज़ विपत्ति से घिरे ग्रामीण जीवन में साहस और संघर्ष की प्रेरणा का प्रतीक है।
- महामारी की भयावह पृष्ठभूमि में इस ध्वनि का प्रभाव शारीरिक उपचार से अधिक ग्रामीणों के मनोबल पर पड़ता है।

चरण 1: गाँव की भयावह परिस्थिति गाँव मलेरिया और हैजे की चपेट में था। घरों में रोग और मृत्यु का आतंक फैला था। दिन की विवशता के बाद रात का सन्नाटा इस भय को और गहरा कर देता था। शोकाकुल, असहाय ग्रामीणों को अँधेरे में अपने अकेलेपन और मृत्यु की आशंका का तीखा अनुभव होता था।

चरण 2: ढोलक की आवाज़ का प्रभाव और उसका कारण ऐसे वातावरण में पहलवान की ढोलक का स्वर मृतप्राय गाँव में संजीवनी-शक्ति भर देता था। उसकी ताल सुनकर लोगों में जीने की आशा और बीमारी से जूझने का साहस जागता था। परिचित स्वर अँधेरे के सन्नाटे और भय को चीरकर यह भरोसा देता था कि जीवन का संघर्ष अभी जारी है। वह मानो पराजय स्वीकार न करने का आह्वान था। ढोलक महामारी को समाप्त नहीं करती थी, किंतु उसका लयपूर्ण, उत्साहवर्धक स्वर ग्रामीणों की निराशा घटाकर उन्हें मानसिक सहारा देता था। इसी कारण उसकी आवाज़ पूरे गाँव के लिए आशा और जीवट की आवाज़ बन जाती थी।

चरण 3: निष्कर्ष पहलवान की ढोलक सुनकर महामारी से भयभीत गाँव में साहस, आशा और जीवन-संघर्ष की शक्ति का संचार होता था। उसकी ताल रात के सन्नाटे और मृत्यु-भय को तोड़कर लोगों को मानसिक संबल देती थी।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले महामारी और रात के सन्नाटे की स्थिति बताएँ, फिर ढोलक से मिलने वाली आशा तथा संघर्ष-शक्ति का संबंध स्पष्ट करें।

13. भूषण के द्वारा ऊनी ड्रेसिंग गाउन देने पर यशोधर पंत के मन में उत्साह का अभाव किन जीवन मूल्यों की उपेक्षा के कारण दिखाई देता है? बुज़ुर्ग पीढ़ी हमसे क्या अपेक्षा करती है? (लगभग 150 शब्दों में लिखिए) [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी पीढ़ियों के बीच बदलते जीवन-मूल्यों और पारिवारिक आत्मीयता की आवश्यकता को सामने रखती है।
- बुज़ुर्गों के प्रति सम्मान में उनकी दिनचर्या, भावनाओं और जीवनानुभव को समझना भी शामिल है।

चरण 1: प्रसंग और उपेक्षित मूल्यों की पहचान भूषण पिता को ऊनी ड्रेसिंग गाउन देता है और सुबह दूध लाते समय उसे पहनने की बात कहता है। यशोधर पंत को इस उपहार में पुत्र का स्नेह पहचानने के साथ यह कमी भी खटकती है कि पुत्र ने स्वयं दूध लाने की जिम्मेदारी लेने की बात नहीं कही। यहाँ वस्तु का मूल्य और संबंधों का मूल्य अलग दिखाई देते हैं। उत्तर में पिता को केवल आधुनिक वस्तुओं का विरोधी बताना उचित नहीं होगा; उनकी पीड़ा का केंद्र आत्मीय सहभागिता का अभाव है।

चरण 2: उत्तर की रूपरेखा पहले उपहार के प्रसंग से बुज़ुर्ग पिता की अपेक्षा स्पष्ट करें। उसके बाद सेवा, संवेदनशीलता, जिम्मेदारी और सम्मान की उपेक्षा का उल्लेख करें। अंत में बुज़ुर्ग पीढ़ी की भावनात्मक तथा व्यावहारिक अपेक्षाओं को जोड़ते हुए उत्तर पूरा करें।

चरण 3: लगभग 150 शब्दों में आदर्श उत्तर भूषण द्वारा ऊनी ड्रेसिंग गाउन दिए जाने पर यशोधर पंत उत्साहित नहीं होते, क्योंकि उपहार के पीछे उन्हें अपेक्षित आत्मीयता और सेवा-भाव का अभाव दिखाई देता है। भूषण चाहता है कि वे सुबह दूध लेने जाते समय गाउन पहनें। पिता की अपेक्षा है कि बेटा यह भी कहे कि अब दूध वह स्वयं लाया करेगा। उन्हें महँगी वस्तु से अधिक अपने श्रम और बढ़ती उम्र के प्रति संवेदनशीलता चाहिए। इस प्रसंग में पारिवारिक जिम्मेदारी, सहानुभूति, बड़ों की सेवा तथा भावनात्मक सम्मान जैसे जीवन-मूल्यों की उपेक्षा उभरती है।

बुज़ुर्ग पीढ़ी हमसे केवल भौतिक सुविधाएँ नहीं, बल्कि स्नेह, समय और साथ चाहती है। वह अपेक्षा करती है कि हम उसके अनुभवों का आदर करें, उसकी बात ध्यान से सुनें और पारिवारिक निर्णयों में उसे शामिल रखें। उसके विश्वासों का उपहास करने के बजाय संवाद बनाएँ

तथा दैनिक कार्यों में सहयोग दें। ऐसा व्यवहार उसे परिवार में उपयोगी, सुरक्षित और सम्मानित होने का विश्वास देता है।

चरण 4: निष्कर्ष यशोधर पंत की उदासी सेवा, संवेदनशीलता और पारिवारिक सहभागिता की कमी से जुड़ी है। बुज़ुर्गों को उपहार के साथ हमारा समय, सहयोग और सम्मान भी चाहिए।

त्वरित सुझाव: दूध लाने की जिम्मेदारी वाले प्रसंग को आधार बनाएँ; इसी से भौतिक उपहार और पिता की भावनात्मक अपेक्षा का अंतर स्पष्ट होगा।

14(क). "सिंधु-सभ्यता साधन-संपन्न थी, पर उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था।" सोदाहरण पुष्टि कीजिए। (लगभग 150 शब्दों में)

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सिंधु-सभ्यता की संपन्नता उसकी विकसित नगर-योजना, भवन-निर्माण और नागरिक सुविधाओं में दिखाई देती है।
- साधन-संपन्नता और दिखावे में अंतर है। यहाँ उपयोगिता, कलात्मक रुचि और सामुदायिक जीवन को भव्य सत्ता-प्रदर्शन से अधिक महत्त्व मिला था।

चरण 1: कथन के समर्थन में उदाहरण चुनना उत्तर में मोहनजोदड़ो की व्यवस्थित सड़कें, पक्की ईंटों के घर, कुएँ, ढकी नालियाँ और महाकुंड का उल्लेख करें। इनके साथ विशाल राजमहलों, भव्य मंदिरों तथा शासकीय प्रभुत्व के दिखावटी स्मारकों के स्पष्ट साक्ष्य न मिलने की बात जोड़ें। इससे संपन्नता तथा आडंबरहीनता, दोनों पक्ष स्पष्ट होते हैं।

चरण 2: लगभग 150 शब्दों में आदर्श उत्तर 'अतीत में दबे पाँव' में मोहनजोदड़ो के अवशेष बताते हैं कि सिंधु-सभ्यता साधन-संपन्न होते हुए भी आडंबरहीन थी। वहाँ चौड़ी, व्यवस्थित सड़कें, पक्की ईंटों के मकान, कुएँ और ढकी हुई नालियाँ थीं। जल-निकासी की विकसित व्यवस्था नागरिक स्वास्थ्य और सुविधाओं के प्रति सजगता का प्रमाण है। विशाल अन्नागार और महाकुंड उनके निर्माण-कौशल तथा सामुदायिक जीवन की उन्नति को प्रकट करते हैं।

फिर भी वहाँ मिस्र या मेसोपोटामिया जैसी सभ्यताओं की तरह विराट राजमहलों, भव्य मंदिरों अथवा राजसत्ता का आतंक जताने वाले स्मारकों की प्रधानता नहीं दिखाई देती। घरों की बनावट में उपयोगिता महत्त्वपूर्ण है, बाहरी प्रदर्शन नहीं। मुहरों, मृद्भांडों और छोटी मूर्तियों में भी सुघड़ता तथा कलात्मक संयम दिखाई देता है। प्रसिद्ध नर्तकी की छोटी प्रतिमा इसकी सुंदर मिसाल है। वहाँ की संस्कृति सामान्य नागरिक के जीवन से जुड़ी प्रतीत होती है। अतः सिंधु-सभ्यता की महानता धन और शक्ति के प्रदर्शन में नहीं, सुव्यवस्थित जीवन, सौंदर्यबोध और नागरिक संस्कृति में निहित थी।

चरण 3: निष्कर्ष नगर-योजना और नागरिक सुविधाएँ संपन्नता सिद्ध करती हैं; उपयोगितापूर्ण निर्माण तथा सत्ता-प्रदर्शन की अनुपस्थिति उसकी आडंबरहीनता को पुष्ट करते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले सुविधाओं के उदाहरण दें, फिर दिखावे की अनुपस्थिति समझाएँ; केवल नगर की विशेषताओं की सूची न लिखें।

14(ख). आपके विचार से पढ़ाई-लिखाई के संबंध में 'जूझ' के लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही था या लेखक के पिता का? लगभग 150 शब्दों में तर्क सहित उत्तर दीजिए।

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'जूझ' में आनंद यादव का शिक्षा के लिए संघर्ष आत्मविकास, स्वावलंबन और प्रतिकूल परिस्थितियों से लड़ने की आकांक्षा का परिचायक है।
- किसी दृष्टिकोण का मूल्यांकन करते समय उसके तर्क और परिणाम दोनों देखें। पिता की आर्थिक चिंता समझना आवश्यक है, पर उससे बच्चे को शिक्षा से वंचित करना उचित नहीं हो जाता।

चरण 1: दोनों दृष्टिकोणों की तुलना करना लेखक शिक्षा को खेती की सीमाओं से निकलकर बेहतर भविष्य बनाने का साधन मानता था। दत्ता जी राव ने उसकी पढ़ने की इच्छा का समर्थन किया और पिता को उसे विद्यालय भेजने के लिए तैयार किया। पिता खेत के काम को प्राथमिकता देकर पढ़ाई छुड़ाना चाहते थे। उत्तर में लेखक की लगन और शिक्षा के दीर्घकालीन लाभ को अपने निर्णय का आधार बनाएँ।

चरण 2: लगभग 150 शब्दों में आदर्श उत्तर मेरे विचार से पढ़ाई-लिखाई के संबंध में 'जूझ' के लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही था। लेखक समझता था कि केवल खेती में लगे रहने से उसके जीवन की कठिनाइयाँ दूर नहीं होंगी। शिक्षा उसे ज्ञान, आत्मविश्वास और आजीविका के नए अवसर दे सकती थी। इसलिए वह बाधाओं के बावजूद विद्यालय लौटना चाहता था। पढ़ाई के साथ खेती का काम करने को तैयार होना उसकी लगन और जिम्मेदारी का प्रमाण है।

दत्ता जी राव ने उसकी इच्छा को उचित माना और पिता को उसे पढ़ाने के लिए समझाया। उनका सहयोग लेखक की प्रतिभा के विकास में सहायक बना। इसके विपरीत, पिता पढ़ाई को व्यर्थ मानकर बेटे से खेत में काम करवाना चाहते थे। परिवार की आर्थिक जरूरतों की चिंता समझी जा सकती है, पर शिक्षा छुड़ाना उसका दूरगामी समाधान नहीं था। इससे गरीबी का चक्र बना रहता। लेखक का आगे अध्ययन करना तथा कविता और साहित्य के प्रति विकसित रुचि दिखाते हैं कि शिक्षा उसके व्यक्तित्व को नई दिशा देने वाली शक्ति थी।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक और दत्ता जी राव का शिक्षा-समर्थक दृष्टिकोण उचित था, क्योंकि वह तात्कालिक श्रम के साथ भविष्य के विकास और आत्मनिर्भरता की संभावना भी देखता था।

त्वरित सुझाव: अपना मत स्पष्ट लिखकर लेखक की लगन, दत्ता जी राव के सहयोग और पिता की संकीर्ण दृष्टि से जुड़े प्रसंगों द्वारा उसे सिद्ध करें।